चकमक

जुलाई, 1990

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 4.00

सृजन अंक

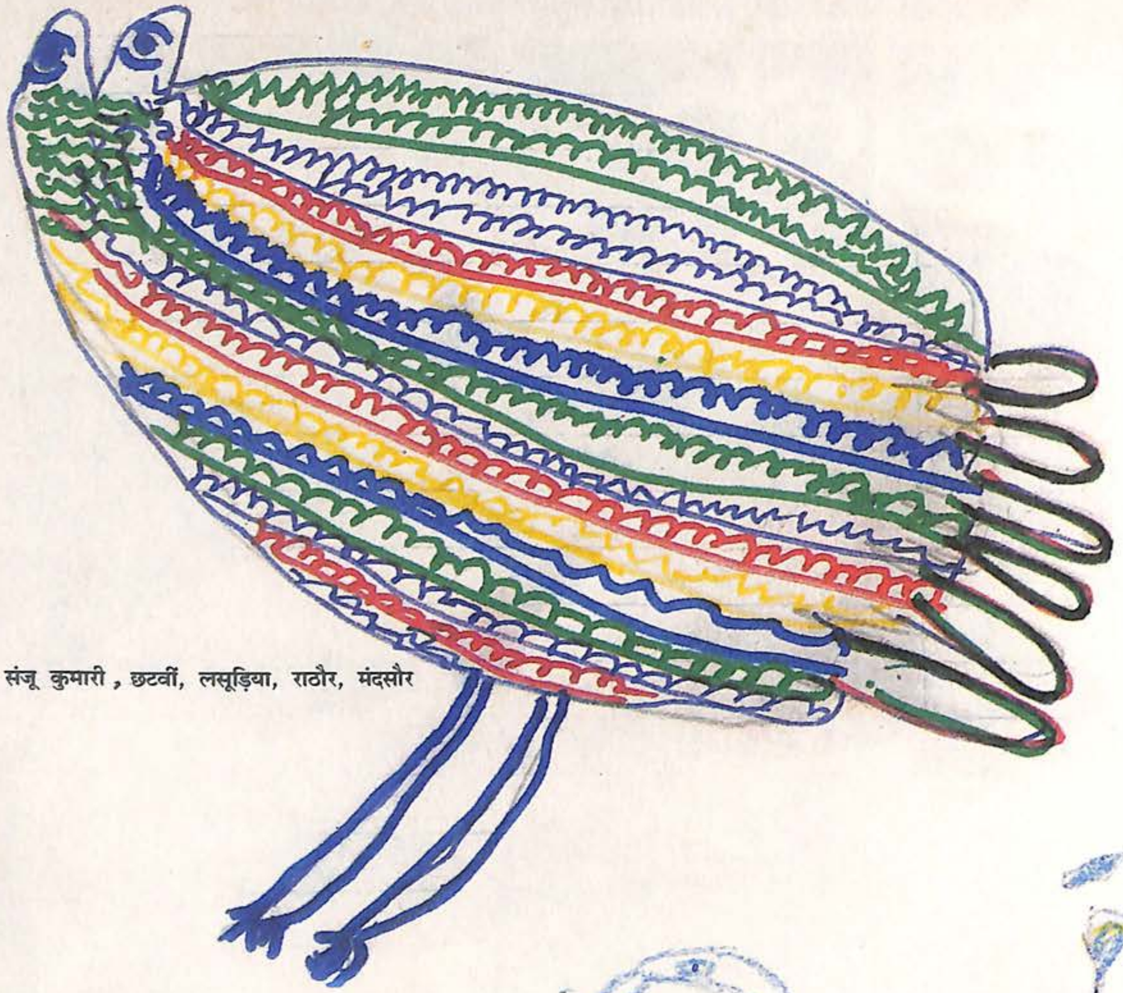

संजू कुमारी , छटवीं, लसूड़िया, राठौर, मंदसौर

राधा, छटवीं, धार

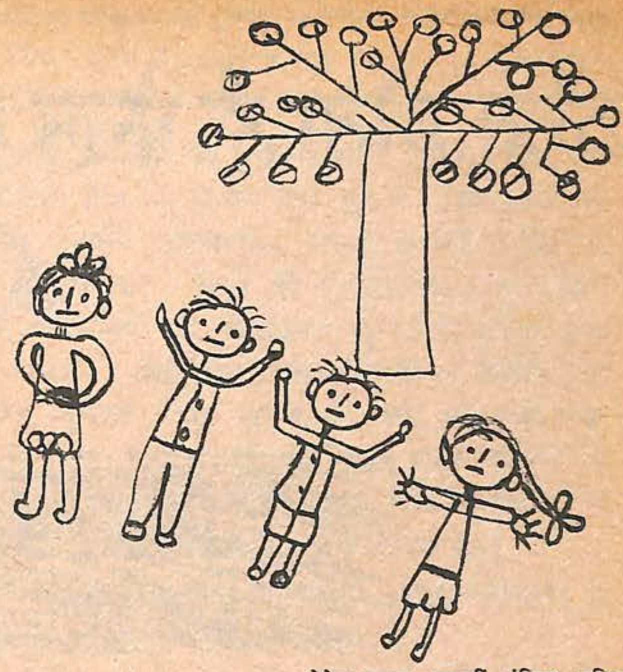

देवेन्द्र कुमार, सातवीं, उंचिया, दतिया

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 6 अंक 1 जुलाई, 1990
संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही
कला
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह
विज्ञापन
इला मिश्र

चकमक का चंदा
एक प्रति : चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता :
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)

कागज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से।
सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)

सृजन अंक में...

2 कौन होता है फेल?
4 सृजन की अच्छी कहानियां, कविताएं तथा चित्र
27 धारावाहिक : भूगर्भ की यात्रा-10
31 दुनिया पक्षियों की - 15
32 चलते - फिरते तथ्य
34 कहां जाएंगे आदिवासी?
37 गुदड़ीलाल के कारनामे

आवरण : कनुप्रिया, पांच वर्ष, भोपाल

इस अंक से चकमक छठवें वर्ष में प्रवेश कर गई हैं। सबको बधाई!

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

कौन होता है फेल?

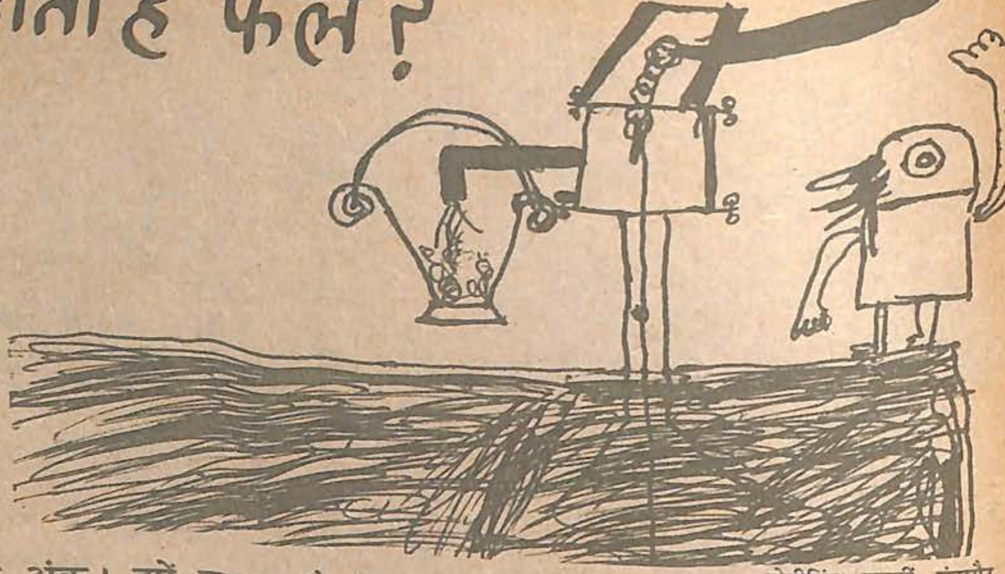
मोतीसिंह, छठवीं, मंदसौर

यह रहा सृजन अंक। हमें मालूम है कि तुम्हें इस अंक का बेसब्री से इंतज़ार होगा। जैसे परीक्षा के बाद रिजल्ट का होता है। पर एक फ़र्क है, उसमें तो पास-फेल का डर होता है, इसमें ऐसी कोई बात नहीं है। सृजन में जिसने भी भाग लिया, वह पास! यहां फेल तो वही होते हैं जो अपनी कल्पनाशीलता, अपनी अवलोकन क्षमता और अपनी नया कुछ कर गुज़रने की इच्छा का ठीक उपयोग नहीं करते हैं। यहां फेल वही होते हैं जो अक्ल को छोड़ नकल के पीछे भागते हैं, या फिर फेल होते हैं वे मां-बाप जो अपने नन्हें-मुन्नों को उनके मन का नहीं करने देते और उनके रचना संसार में अपनी आधी-अधूरी इच्छाओं को ज़बरन थोप देते हैं। हमारा इशारा किधर है, समझने वाले समझ ही गए होंगे! खैर...

सृजन में लगभग हज़ार रचनाएं आईं। चकमक में प्रतिदिन आने वाली डाक में चित्रों की संख्या अन्य रचनाओं के मुकाबले कहीं अधिक होती है सृजन का भी यही हाल रहा। यहां भी चित्र ही अधिक थे। कहानियां होंगी कोई ढाई सौ के आसपास। कविताएं लगभग सौ और निबंध, कविताओं का दसवां हिस्सा यानी.... अब तुम्हीं हिसाब लगा लो।

तुममें से कईयों ने जनवरी, 87 का चकमक का 'तुम्हारा अपना अंक' देखा होगा। उस बार की रचनाओं पर हमने लंबी-लंबी टिप्पणियां भी प्रकाशित की थीं। वे टिप्पणियां अब भी लागू होती हैं। इसलिए कहने को अधिक कुछ नहीं है सिवाय एक-दो बातों के।

चित्रों में एक बात साफ़ नज़र आई कि उनमें रटी-रटाई झोपड़ी, खजूर के पेड़ और तिकोने पहाड़ बहुत कम थे। इससे हमें बेहद खुशी हुई। क्या इसे चकमक का असर कह सकते हैं? अधिकांश चित्रों में अपने आसपास की चीज़ों, घटनाओं और परिवेश का चित्रण है। हमने पच्चीस ऐसे चित्र चुने हैं, जिन्हें अच्छे चित्र कहा जा सकता है। इनमें से चार चित्र इस अंक के आवरण दो तीन तथा चार पर प्रकाशित हैं, तेरह चित्र पृष्ठ 17, 20, 21 एवं 24 पर

प्रकाशित हैं। शेष चित्रों का उपयोग अगले अंकों में होगा। उनके नाम प्रकाशित कर रहे हैं। इनके अलावा लगभग सौ चित्र ऐसे हैं, जो अच्छे चित्रों के मुकाबले उन्नीस हैं। इन्हें बनाने वालों के नाम भी प्रकाशित कर रहे हैं।

यहां-वहां से पढ़ी या सुनी कहानियों के ढेर में से पच्चीस ऐसी कहानियां भी निकल आईं, जिन्हें पढ़कर मज़ा आता है। ये कहानियां हमारे आसपास ही घटती हैं। इनसे पता चलता है कि तुम अपने आसपास घटने वाली छोटी से छोटी घटना को भी कितने ध्यान से देखते हो। यहां से वास्तविक शुरूआत होती है वैज्ञानिक मानसिकता की। इन कहानियों में कल्पना भी है। वरना शेर हर किसी के घर चाय पीने नहीं आ सकता, वह एक कल्पनाशील व्यक्ति के घर ही आएगा। पिताजी से मार खाकर कुटेल गद्दा बनने में भी एक कहानी छुपी है, यह तुममें से ही कोई सोच सकता है। बहरहाल, हम यही चाहते हैं कि अपनी नज़र इतनी पैनी रखो कि छोटी से छोटी घटना भी तुम्हारे ध्यान में आने से रह ना पाए। चुनी गई कहानियां इसी अंक में प्रकाशित हैं।

छह कविताएं भी इस अंक में प्रकाशित हैं। इनसे एक आशा बंधती है कुछ बेहतर रचने की। निबंधों में कोई उल्लेखनीय रचना नहीं है।

कहानियों और कविताओं के साथ जो चित्र दिए गए हैं वे सृजन के ही हैं, पर सात चित्रों को छोड़कर अन्य चित्र चुने हुए अच्छे चित्रों में शामिल नहीं हैं।

अच्छे चित्र, अच्छी कहानियां और प्रकाशित कविताओं के रचनाकारों को छह माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी, इसके अलावा एक सुंदर पुस्तक भी। अन्य प्रकाशित चित्रों के रचनाकारों को भी छह माह तक चकमक उपहार में मिलती रहेगी। सृजन में भाग लेने वाले हरेक रचनाकार को सृजन अंक भेजा जा रहा है।

शेष 'अच्छे चित्र' इनके हैं—

रामसिंह, छठवीं, **धार**। राजेंद्रसिंह, सातवीं, **देहरिया साहू, देवास**। अभिलाषा आरस, छठवीं; रचना राठौर, आवेग उपाध्याय, तीसरी, **सभी देवास**।

इन सभी के चित्र भी अच्छे लगे। ये हमारे पास सुरक्षित हैं। इन्हें समय-समय पर प्रकाशित किया जाएगा।

देवेंद्र कुमार, सातवीं. **ऊंचिया, दतिया**। मोतीसिंह, छठवीं; नंदकिशोर, सातवीं; **मंदसौर**। अशोक सोनी, चौथी; बबीता; छठवीं **मानकुंड, देवास**। सीमा मंडलोई पांचवीं. **धार**। वन्या झा, **भोपाल**। ***(इनके चित्र इसी अंक में विभिन्न रचनाओं के साथ प्रकाशित हैं।)***

कुमारी कला पांचवीं; सीताराम पाटीदार, सातवीं; **देहरिया साहू**। संगीता, पांचवीं; हिंदूसिंह, छठवीं; **देवगढ़**। संदीप, तीसरी; **कन्नौद**। शालिग्राम कामले, आठवीं; नरेंद्रसिंह परमार, बारह वर्ष; कविता वर्मा, आठवीं; सोना, छह वर्ष; चंद्रकांत चितले, नवमीं; **नवोदय विद्यालय चंद्रकेशर**। शोभाराम, पहली; रामदीन, पहली; **बांइजगवाड़ा**। लक्ष्मणसिंह चौधरी; राधेश्याम दास बैरागी; ममता, चौथी; नंदू, चौथी; मीना, छठवीं; रियाना, चौथी; सिद्धनाथ, पांचवीं; गिरजा, चौथी; सुनील, तीसरी; महेंद्रसिंह चौहान, पांचवी; **मानकुंड**। रूपचंद, पांचवीं; **अरलावदा**। गौरव शर्मा, चौथी; **हाटपीपल्या**। शिखा, आठ वर्ष; स्वाति स्याग, दूसरी; विकल्प, तीन वर्ष; वर्षा कुशवाह, दसवीं; **देवास**। **सभी ज़िला देवास**।

सुरेश, छठवीं; किशोर, छठवीं; मुकेश सातवीं; सुगनी, पांचवीं; दादूसिंह, सातवीं; बनेसिंह, आठवीं; राजकुमारी, सातवीं; **सभी धार**।

श्रीकांत, **पीपल्यामंडी** चेतराम पाटीदार; सुंदरदास, छठवीं; जगदीशचंद्र टेलर, छठवीं; नरेंद्र कुमावत, सातवीं; नंद किशोर कुमावत, सातवीं; संजय शर्मा, छठवीं; दशरथलाल, छठवीं; गणपतलाल टेलर, छठवीं; पप्पूलाल; गोवर्धन सिंह, विनोद सोलंकी, छठवीं; सुरेशचंद्र सातवीं; **सभी लसूड़िया राठौर**।

मोहम्मद इस्माईल, छठवीं; **पीपल्या स्टेशन**। दिनेश कुमार, छठवीं; दिनेश गिरि, **गुड़भेली**। पंकज पायक, छठवीं; **मंदसौर**। **सभी ज़िला मंदसौर**।

संदीप कुमार, चौदह वर्ष, **पवेरों, ज़िला दुर्ग**। शोभा, चौथी; केशवसिंह यादव, पांच वर्ष; माधवी, तीसरी; दामोदरसिंह, नौ वर्ष; शोभा देवी, तीसरी; महेश कुमार, छठवीं; **सभी उंचिया, जिला दतिया**। प्रमोद राय, छठवीं; **पिपरिया**। पूजा दुबे, सातवीं; **सेमरी खुर्द**। राधा बाई, छठवीं; रानी **पिपरिया, सभी जिला होशंगाबाद**। पुष्पेंद्र, सातवीं, **रिंगनोद, जिला रतलाम**। वंदना आर्य, तीसरी, **गोहद, ज़िला भिण्ड**। आभा कौशिक, सातवीं, **भानसोज, ज़िला रायपुर**। सतीश गुप्ता, दस वर्ष. **भेलसी, जिला टीकमगढ़**। संतोष कुमार, सोलह वर्ष, **चकनवादा ज़िला पटना**। राजू शुक्ल, सात वर्ष, ऋषिवैली स्कूल, चितूर **आंध्रप्रदेश**।

म्याऊं - म्याऊं करती आती घर के चुहे चटकर जाती
अवसर मिले तो दुध न छोड़े आहट पाते ही ये दौड़े

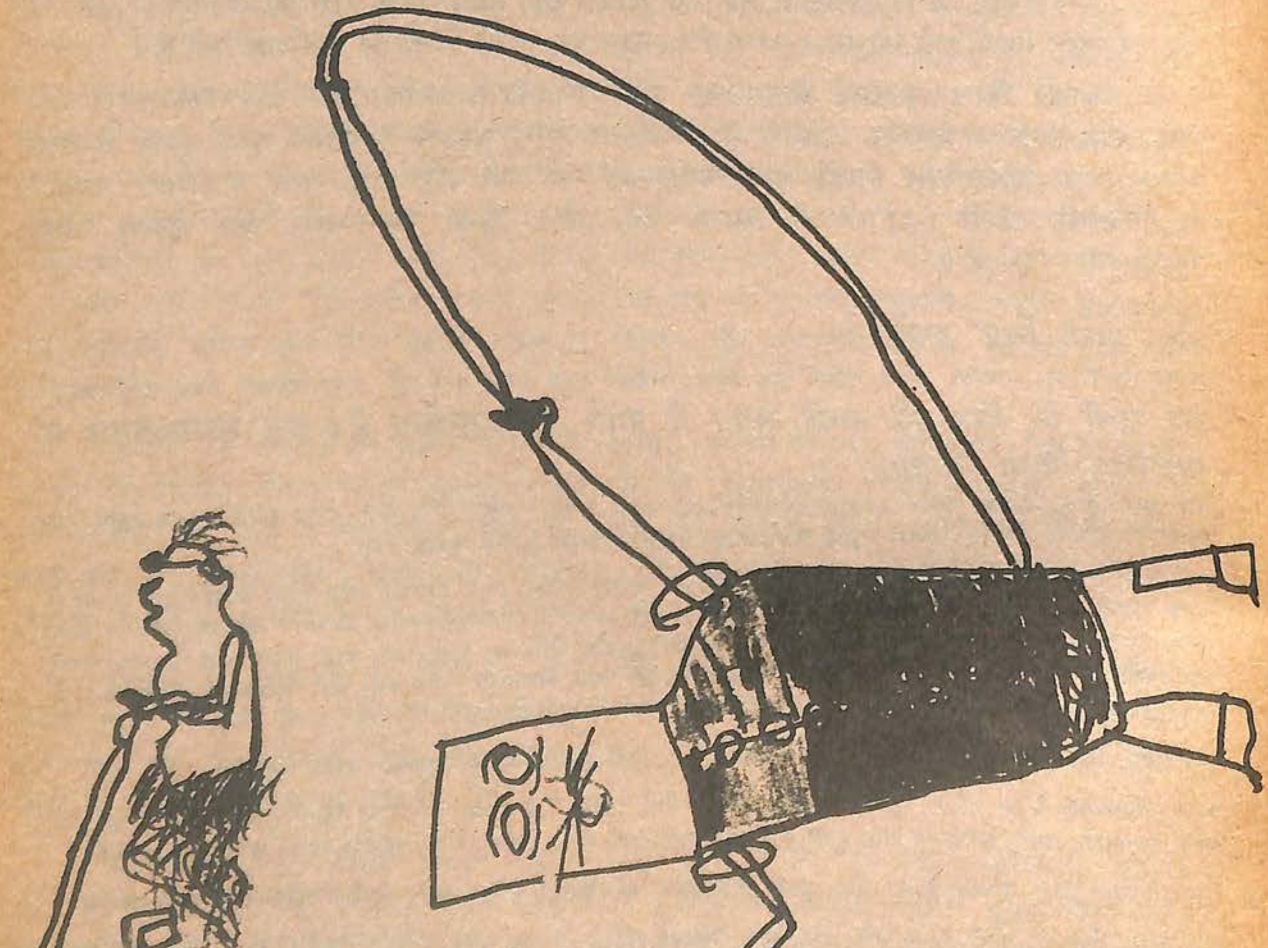

चित्र एवं कविता : आवेग, तीसरी, देवास

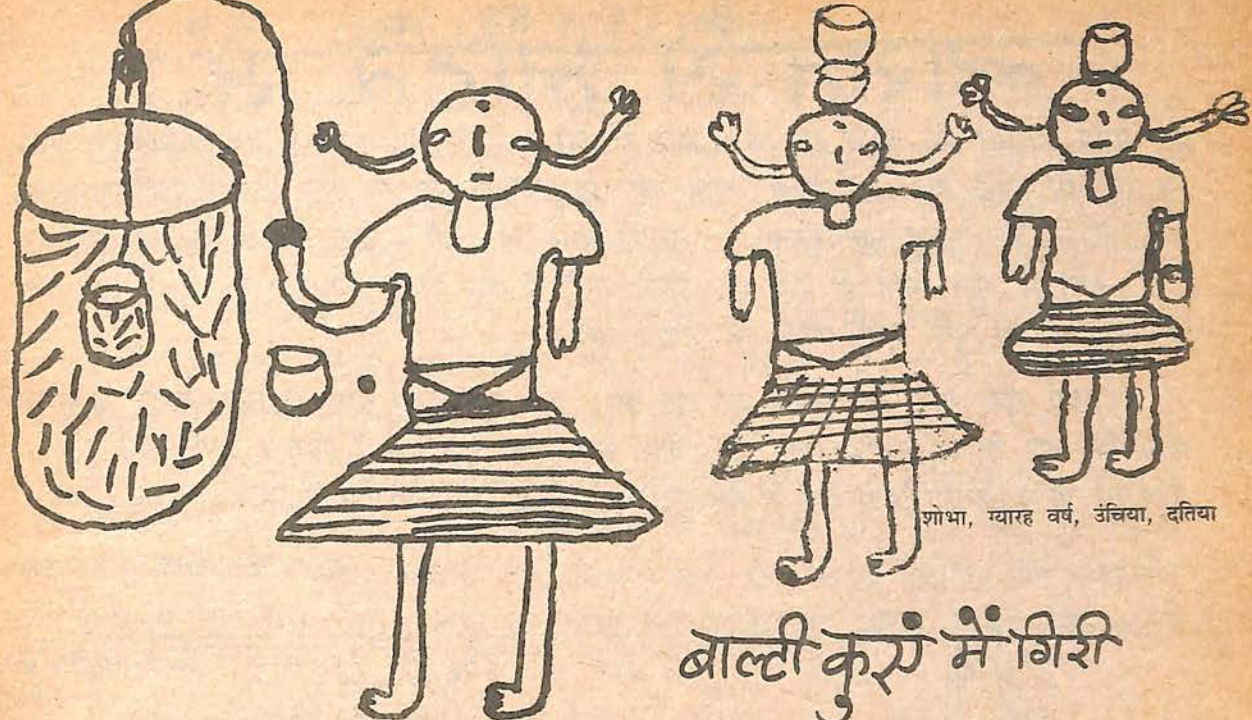

शोभा, ग्यारह वर्ष, उंचिया, दतिया

बाल्टी कुएं में गिरी

हमारे गांव में कुआं नहीं था। मैं सार्वजनिक कुएं में पानी लेने गया तो अचानक मेरे हाथ से रस्सी छूट गई और रस्सी-बाल्टी दोनों कुएं में गिर गए। तब मैं रोने लगा। रोते-रोते घर आया। पिता जी पूछे, "क्यों रोते हो बेटा?"

मैं बोला, "पिता जी कुएं में बाल्टी गिर गई।"

पिता जी बोले, "तुम रोते क्यों हो, गिर गई तो निकाल लेंगे।"

तो फिर पिता जी ने बाल्टी को निकाला और हम घर आ गए।

☐ चेतराम कोल, आठवीं, लतार, शहडोल।

शेर आया चाय पीने

एक बार मैं स्टोव पर चाय बना रहा था। मेरे पीछे एक शेर आया तो उसने कहा, "भाई मैं भी चाय पीऊंगा, जरा ज्यादा बनाना।"

मैंने कहा कि, "मैं चाय नहीं पिलाऊंगा क्योंकि तुम मनुष्य खाते हो।"

☐ विष्णु प्रसाद मालवीय, तेरह वर्ष, लसूड़िया राठौर, मंदसौर

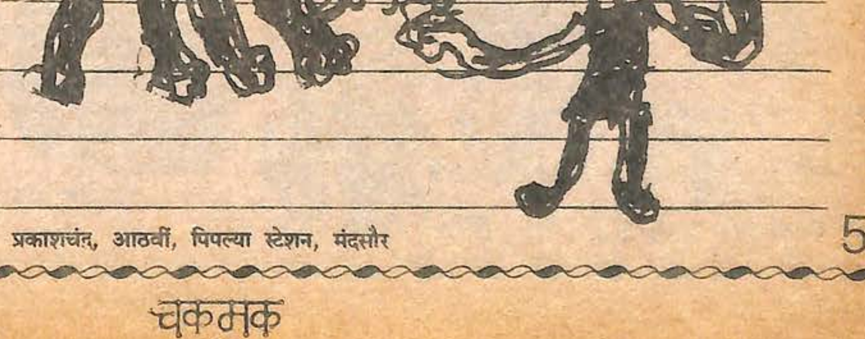

प्रकाशचंद, आठवीं, पिपल्या स्टेशन, मंदसौर

बारात से लौटते में

हम हमारे परिवार कि बरात गए थे। उधर से हम आ रहे थे। रास्ते में एक सायकिल वाला आ रहा था, पिछे हम आ रहे थे, आगे वह आ रहा था। दाहिने ओर बिजली का एक खंबा गड़ा था तो हमें साईड नहीं मिला, तो उसको हमने नाली में भडोक दिया। फिर वो पीछे रह गया। रास्ते में धूल बहुत हो रही थी, इससे रास्ते में वह आगे निकल गया। उसने हमें कहा कि मेरे गांव में तुम्हें ऐसा मारेंगे कि जवाब नहीं।

आगे एक गन्ना का ट्रेक्टर जा रहा था। उस सायकिल वाले ने उस ट्रेक्टर वाले को कहा कि तुम उसको साईड मत देना। फिर सायकिल वाला आगे निकल गया। हम धूल में बंदर बन गए थे। हमारा ट्रेक्टर चुंगी पर रोक लिया तो हमने उसे पैसे नहीं दिए तो ट्रेक्टर खड़ा कर दिया।

☐ मुकेश कुमार, छठवीं, मानकुंड देवास

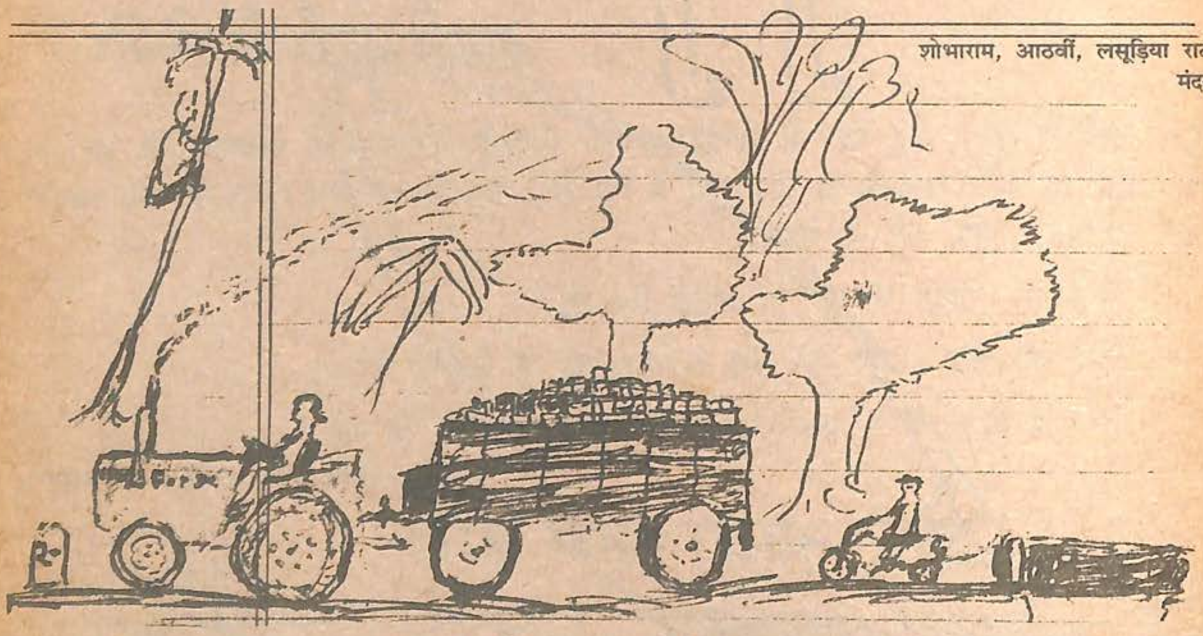

शोभाराम, आठवीं, लसूड़िया राठौर, मंदसौर

रस्ते में मिली लड़की

एक दिन हम सब कवंदा जा रहे थे। तो तब वह मैना (महीना) वर्षा की थी। पानी बहुत गिर रहा था। उधर से एक लड़की आ रही थी। तो हमने देखा कि वह लड़की बहुत कांप रही थी। हमने देखा कि यह लड़की कौन होगी। तब हमने उसके पास जाकर कहा कि तुम किसकी लड़की हो? वह बोली मेरे पापा-मम्मी मुझे छोड़कर चले गए हैं। मैं अकेली हूं, मुझे कुछ पहना दो। तब हमने उसे एक शाल दी।

☐ मनीष वर्मा, सातवीं, मानकुंड, देवास

तीस की मुर्गी बीस में

मेरे दोस्त बाज़ार जा रहे थे तो मैंने पूछा कि तुम कहां जा रहे हो। तो उन्होंने कहा कि हम बाज़ार जा रहे हैं। मैंने कहा कि मैं भी चलता हूं। फिर मैंने कहा कि मेरे पास तो पैसे ही नहीं हैं मैं जाकर क्या करुंगा। फिर मेरी समझ में आया। मैंने कहा कि मेरे घर में मुर्गियां बहुत सारी हैं, एक मुर्गी को पकड़कर बाजार ले चलते हैं। हम फिर उस मुर्गी को पकड़कर बाज़ार ले गए।

फिर हमने कहा कि मुर्गी ले लो। एक दुकानदार ने कहा कि, क्यों रे मुर्गी कितने में देता है। मैंने कहा कि पच्चीस रुपए लेऊंगा। उसने कहा कि देना है, तो ये ले दस रुपया। मैंने कहा कि दस रुपया में नहीं देऊंगा।

फिर मैं आगे गया, तो फिर मुझे एक ने और पूछा कि आ रे मुर्गीवाले इधर आ। मैं गया। उसने पूछा कि यह मुर्गी बेचने को लाया। मैंने कहा कि हां। उसने कहा कि इसकी कीमत क्या लेगा। मैंने कहा, पच्चीस रुपए। उसने कहा, पंद्रह रुपया देऊंगा। मैंने कहा कि पंद्रह रुपया में मुर्गी नहीं आती। उसने कहा फिर मैं आखरी बात कहता हूं तुझे बीस रुपया देऊंगा। मैंने कहा कि ला दे। फिर मैंने बीस रुपए देकर मुर्गी दे दी।

फिर मैं अपने दोस्तों के साथ घूमता रहा। फिर मैंने कहा कि चलो नोट-बुक खरीद लेते हैं। मैंने पांच रुपया का नोट बुक खरीदा। फिर मैं अपने दोस्तों के साथ घर आ गया। फिर मेरे भैया ने पूछा कि तूने मुर्गी कितने में बेची। मैंने कहा कि बीस रुपए में। मेरे भैया ने कहा कि तीस रुपए की मुर्गी बीस रुपए में ही दे आया। भैया ने मुझे दो चांटे लगाए और कहा अब ऐसा कभी मत करना।

☐ गोकुल कुमार, छठवीं, बांईजगवाड़ा, देवास

अमित शर्मा, सातवीं, भोपाल

काम करें या पढ़ाई ?

नरेंद्र सेंधव, तेरह वर्ष, चंद्रकेशर, देवास

जब हम पढ़ने जाते हैं, तो गांव का एक चरवाहा हमें पढ़ने जाने के लिए मना करता है। वह कहता है कि आजकल बीस साल पढ़ने पर भी नौकरी नहीं मिलती। इसलिए तुम बेकार मत पढ़ो। गाय, बकरी चराओ और किसानी का काम करो। हम लोग ऐसी बातें रोज सुनते रहते हैं।

पहले क्या नौकरी के लिए ही पढ़ते थे? पढ़ने के बाद क्या खेती का काम नहीं किया जा सकता?

हम लोग ज्ञान पाने के लिए पढ़ रहे हैं। वह चरवाहा जो कहता है, क्या ठीक है? हम लोग माता-पिता के साथ काम करें या पढ़ाई करें?

☐ राजेश पटेल, तीसरी, रानी सागर, रायगढ़

गुड़िया

मीना की थी प्यारी गुड़िया
सुंदर और भोली गुड़िया
कितनी प्यारी कितनी न्यारी
है ये प्यारी सी गुड़िया
मेरा मन बहलाती है

रोज खेलती मेरे साथ
कभी न कहती कि मीना
मैं ना खेलूं तेरे साथ
कितनी प्यारी सी गुड़िया
कितनी न्यारी सी गुड़िया!

☐ शीतल कोमल, चौथी, देवास

सीमा मंडलोई, पांचवीं, धार

टक्कर में संस्पेंड

एक दिन मैं बाज़ार में गया था, तो वहां पर साइकिल व राजदूत की टक्कर हो गई। वहां जो सिपाही खड़ा था, तो उसने साइकिल वाले और राजदूत वाले दोनों से कहा, चलो थाने। तो राजदूत वाला बोला, कि साहब गलती मेरी नहीं है, गलती साइकिल वाले की है। तो साइकिल वाले ने कहा गलती हम दोनों की है। सिपाही बोला कि तुम दोनों थाने चलो। फिर दोनों ने साइकिल उठाई और चले थाने।

थाने पर उनसे हेड साहब ने पूछा कि गलती किसकी है। साइकिल वाला बोला कि गलती दोनों की है। फिर दोनों को तीन दिन थाने में रखा, फिर उनकी जमानत हुई। तो दोनों ने कहा अगर अपन वहीं सिपाही को पांच-पांच रुपए दे देते, तो तीन दिन जेल में नहीं रहते। अब नौकरी में धब्बा लगेगा। दूसरे दिन वे नौकरी से संस्पेंड हो गए।

□ देवेंद्रसिंह, छटवीं, धार

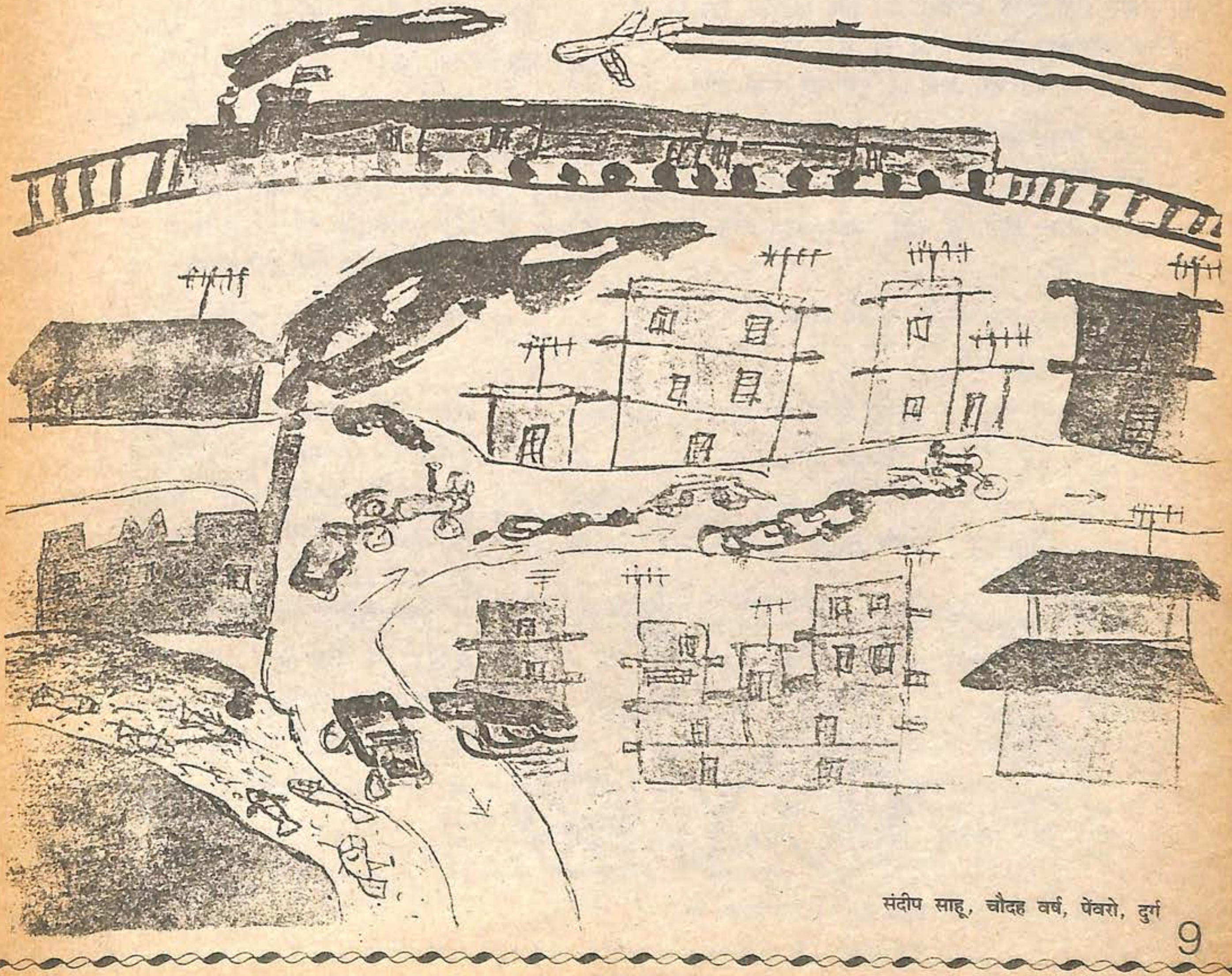

संदीप साहू, चौदह वर्ष, पेंवरो, दुर्ग

हम मेले में गए

नंदकिशोर, सातवीं, मंदसौर

जब हम दोनों साइकिल से मेले में जा रहे थे। तब एक ट्रक आया। ट्रक ड्रायवर शराब की धुन में था। हम दोनों इधर से साइकिल पर जा रहे थे। उस ट्रक वाले ने हम दोनों को चूरने (कुचलने) की कोशिश की। हम दोनों दोस्त चालाक थे। हम साइकिल पर से उतरकर साइकिल टेककर लंबे दूर भाग गए। तब ट्रक हमारे पास आया। हम दोनों ने ट्रक को रोक दिया।

उस ट्रक ड्रायवर ने कहा, ऐ गधे ओन तुमने ट्रक क्यों रोका?

फिर हम दोनों ने कहा, अबे ओ उल्लू क्या कहा नीचे उतर!

उतरते ही हमने उसकी कालर पकड़ ली। तब मेरे दोस्त ने उसकी ट्रक में से टामी निकालकर दो-चार कनपटे में रख दी। ड्रायवर वहीं घायल हो गया। तब कंडक्टर को मेरे दोस्त ने दो बूट दिया। उसका खोपड़ा गंजा हो गया।

फिर हम दोनों मेले में गए। वहां जाकर खूब हंसे। फिर जलेबी खाई।

जब कंडक्टर को होश आया, तब उसने ड्रायवर को ट्रक में पटककर ट्रक स्टार्ट किया और हाटपीपल्या थाने पर गए। उस थानेदार ने कहा क्या हुआ। तब कंडक्टर ने कहा दो लड़के रास्ते में उधर से आ रहे थे। हम दोनों को खूब पीटा था। हम दोनों बेहोश हो गए थे।

□ दिनेश कुमार, कन्हैयालाल, आठवीं, मानकुंड, देवास

गिरी साइकिल से

एक बार मैं अपनी सहेलियों सहित साइकिल चलाने के कोशिश कर रही थी। मुझे साइकिल चलाना नहीं आता था। मेरी एक सहेली बोली, एक बार साइकिल से गिरना पड़ता है, तभी सीख सकते हैं। इस पर सभी कहने लगीं, हां एक बार गिरना पड़ता है। मैं जानबूझकर साइकिल सहित पत्थर पर गिर गई। सिर पर गहरी चोट आई। मैंने तब से साइकिल नहीं चलाई। मुझे आज तक साइकिल चलाते नहीं आती।

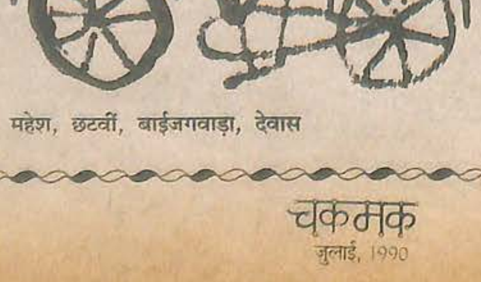

महेश, छटवीं, बाईजगवाड़ा, देवास

□ कीर्ति दुबे, सातवीं, खातेगांव, देवास

चुनाव से पहले, चुनाव के बाद

हमारे गांव में जब भी चुनाव आते हैं तो नेता लोग हमारे घर आते हैं, पैसे देते हैं, कपड़े मिठाई देते हैं और कहते हैं, हमको आप वोट देना। हम तुम्हारे घर बिजली और नल और सड़क बनवाएंगे। खेत में मोटर लगवा देंगे। तुम्हें बैंक से लोन दिलवाएंगे। और भी कई प्रकार के प्रलोभन देते हैं। और जब चुनाव आते हैं तो वस्तुओं के दाम कम हो जाते हैं और कहते हैं कि आपकी सरकार, आपके द्वार।

लेकिन बाद में जब कोई चुनाव जीत जाता है तो छह -सात महीने तक वह उस गांव में नहीं आता जहां कि उसने भारी मतों से विजय प्राप्त की थी। और जब आते हैं तो किसी सेठ के यहां से बाहर ही नहीं निकलते हैं। हमें ही उनके द्वार पर जाना पड़ता है। पर वे कहते हैं, हमें टाईम नहीं है। हमें उनके लिए टाईम है लेकिन उन्हें हमारे लिए टाईम नहीं है। और कभी कभार सुन लें कि हमें बैंक से लोन लेना है तो खुद चलकर आते हैं और आधे पैसे खुद ले जाते हैं। और भरना हमें ही पड़ता है।

इसी कारण सरकार जो भी योजनाएं बनाती है, उसका लाभ गरीबों को नहीं मिलता है और धनवान और धनवान, गरीब और गरीब हो जाते हैं। चुनाव में लाखों रुपए पानी की तरह बहाए जाते हैं, अगर उतने ही पैसे देश की गरीबी हटाने के लिए लगाए जाएं तो देश खुशहाल हो जाए।

☐ हेमंत शर्मा, कन्नौद, देवास

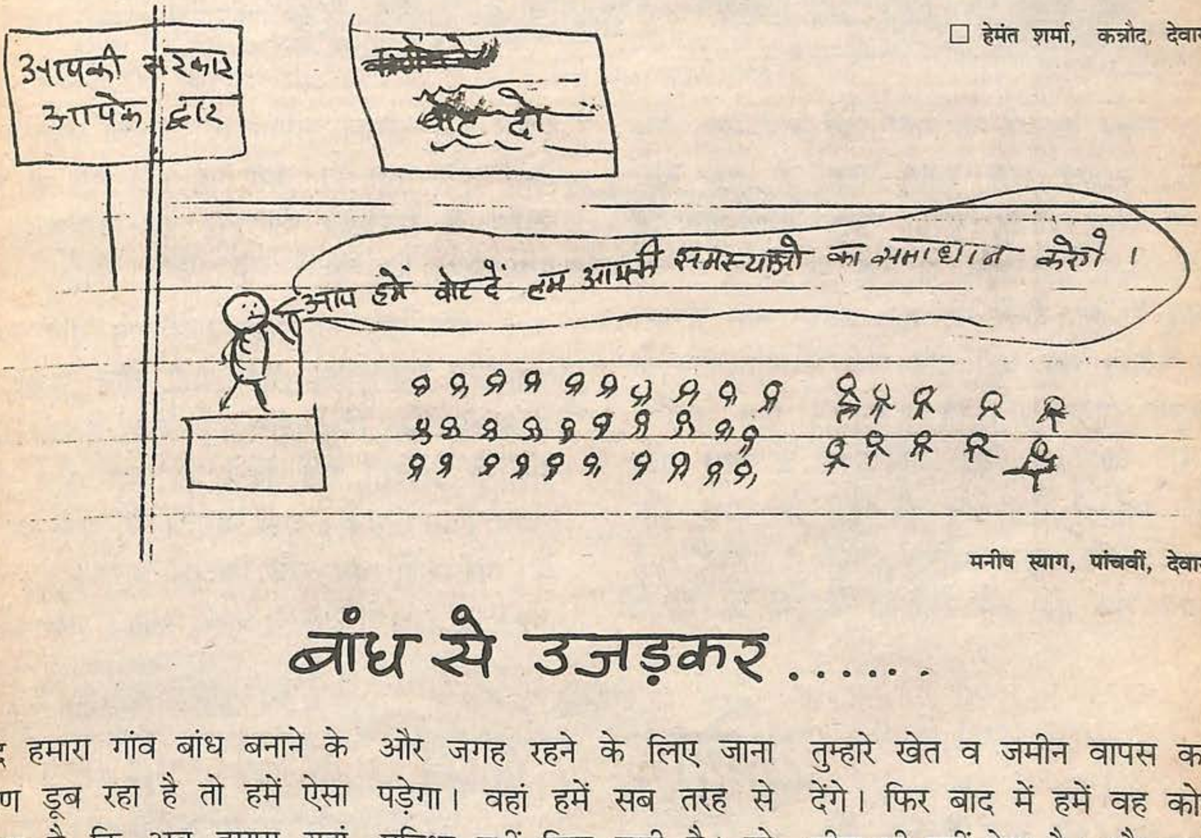

मनीष त्याग, पांचवीं, देवास

बांध से उजड़कर .....

यदि हमारा गांव बांध बनाने के कारण डूब रहा है तो हमें ऐसा लगता है कि अब हमारा यहां रहना संभव नहीं है। हमारे घर डूब जाएंगे। हमारे जो खेत या जानवर जो कुछ भी हैं। सभी चीजें खत्म हो जाएंगी। हमें किसी और जगह रहने के लिए जाना पड़ेगा। वहां हमें सब तरह से सुविधा नहीं मिल पाती है। जो हमें भागने के लिए कहता है, तो हम डर के मारे वहां से किसी दूसरी जगह जाते हैं। और वह हमें यह कहता है कि हम तुम्हारे खेत व जमीन वापस कर देंगे। फिर बाद में हमें वह कोई चीज भी नहीं देता है। और जहां हम रहते थे, जहां हम खेलते थे, वहां आज नदी बह रही है यह सब देखकर हमें बहुत दुख होता है।

☐ राजेन्द्र खेड़ा, छटवीं, चंद्रकेशर, देवास

लालची

एक गरीब आदमी के यहां एक बच्चे का जन्म हुआ। उसका नाम श्यामू रखा तो वह बड़ा होकर एक किसान बना। तब उसके पिता ने उसको एक हल और दो बैल की जोड़ी दी तो श्यामू ने इन चीज़ों को कुछ समय तक संभाल कर रखा। तब वहां उस गांव में एक लालची आदमी रहता था। तो श्यामू ने एक तरकीब सोची। वह एक पैसे वाले सेठ के पास गया और वहां से एक धन का घड़ा ले आया और गांव के बीच ज़रा फ़ालतू जगह में जाकर गाड़ दिया। रात को उस लालची आदमी के सामने श्यामू हल चलाने लगा। तो लालची आदमी ने देखा और पूछा कि क्या यह हल पैसे व धन ज़मीन से निकालने का हल है। तो श्यामू ने उत्तर दिया कि, हां।

तब उस लालची आदमी ने हल आठ हज़ार में और बैलों की जोड़ी बीस हज़ार में मोल ले ली। तो श्यामू बड़ा खुश हुआ। अब लालची आदमी कई दिनों से हल और बैल लेकर फिर रहा है। कहीं जंगलों में, कहीं पहाड़ों में। पर कहीं धन नहीं निकाल पाया।

चित्र एवं कहानी □ शोभाराम, आठवीं, लसूड़िया, राठौर, मंदसौर

कुटेल गद्दा

एक दिन की बात है कि मैंने साइकल में आलपिन चुभाई। फिर पापा ने साइकल देखी। फिर मुझसे पूछा और मैं झूठ बोला। फिर पापा ने मुझसे कबूल करवाया, फिर जाकर मैं सच बोला। मैंने फिर ऐसा ही किया और फिर पापा ने मुझे पीटा। फिर कहीं जाकर मैंने साइकल का पीछा छोड़ा।

इसके कुछ दिन बाद घर में नया सोफा आया। अब थोड़े दिन में मैंने सोफा काटा और फिर पापा ने देखा तो मुझे पीटा।

इस तरह मैं कुटेल गद्दा बनता जा रहा हूं।

□ आवेग उपाध्याय, तीसरी, देवास

पानी भी गिरा, हम भी!

एक दिन जब मैं पानी भरने गई तो मैंने दोनों बाल्टी भरी और फिर लेकर आते समय मेरा पांव तार में अड़ गया, मैं गिर पड़ी। मेरा पांव नाली की फरसी की कोर में अड़ गया और मुझे फरसी की कोर घुटने में चुभ गई और मुझे बहुत ज़्यादा खून निकला।

मैं अस्पताल गई तो मुझे दो टांके लगे और उस दिन सब लोग पंचवटी या चौपाटी जा रहे थे। मेरे पीछे बड़ी दीदी का जाना भी नहीं हुआ।

☐ राशेदा शेख, सातवीं, देवास

शेर खां मंसूरी, पांचवीं, अरलावदा, देवास

गाय

सांझ हुई तो गायें आईं
देखो गायें खूब रंभाईं!

टनन् टनन् टन घंटी बजती
गायें झूम झूमकर चलतीं!

जंगल में चरने जाती हैं
बछड़ा छोड़ यहीं जाती हैं!

वन्या झा, भोपाल

बछड़ा भी है प्यारा-प्यारा
उछल कूद करता है न्यारा!

गायें खाएं घास नरम-नरम
दूध पीएं हम गरम-गरम!

☐ रचना बाला कोरटी, आठवीं, गोटेगांव, नरसिंहपुर

घास की गंजी लगी

घास आधी कट चुकी थी और आधी घास लग चुकी थी। जो घास कट चुका था, पिता जी ने उनकी गंजी लगा दी थी। और वे किसी काम से आठ-दस दिन के लिए बाहर चले गए। उन्होंने बताया कि आधी घास कट जाए तो किसी से लगवा लेना। यह कहकर चले गए।

दो-तीन दिन में घास कट गई, अब लगाएं तो कैसे और कौन लगाए। यह एक समस्या आ खड़ी हुई। फिर हमने एक व्यक्ति से कहा, जो हमारे घर पर बराबर आता-जाता है। हमने उससे कहा, अरे यार घास की गंजी लगानी है! लगा दोगे? उसने कहा कि मेरे पास अभी समय नहीं है, और चला गया।

दो दिन के बाद हमारे घर कुछ लोग आए। थोड़ी देर तक सुनील भैया एवं राजनारायण बातचीत किए। फिर थोड़ी देर बाद सुनील भैया ने कहा कि यार घास की गंजी लगानी है। कुछ देर तक तो कोई हां या ना का जवाब नहीं दिया । फिर उसमें से एक ने कहा कि कितनी घास होगी। एक ने कहा दो एक हज़ार होगी। तभी सुनील भैया ने कहा, नहीं मुश्किल से पांच एक सौ होंगे। तभी एक ने कहा, बस इतनी सी घास है। अरे चलो-चलो यह तो एक मिनट का काम है और वे सब लोग घास के पास गए। और हम भी पीछे से गए। घास की गंजी लगनी शुरू हो गई और बस देखते-देखते घास की गंजी लग गई। उधर हमारी मां ने सबके लिए चाय तैयार कर दी और सबने चाय पी। और हमारी घास की गंजी लग गई जो सबसे बड़ा काम हमारे लिए लग रहा था।

☐ नवीन कुमार झा, दसवीं, केसला, होशंगाबाद

रिम-झिम-रिम-झिम बरसा पानी

अखिलेश शुक्ला, पांचवीं, चितूर, आंध्रप्रदेश

गड़ गड़ गरज रहे हैं, बादल
रिम-झिम-रिम-झिम बरसता पानी
चिड़िया चहक उठी है
पेड़ों पर ठंडी हवा चल रही है
बच्चे पानी में भीग रहे हैं
रिम-झिम पानी बरसा
बच्चे बोले पानी आया!

☐ विवेक खरे, पांचवीं, देवास

सांप ने काटा

हम छोटे थे तब हम पंतग उड़ा रहे थे। तो हमें एक सांप नज़र आया। हम चिल्लाए कि बच्चों भाग जाओ नहीं तो यह ज़हरीला सांप काट खाएगा। इतने में हम भागे तो एक बच्चे को सांप काट खाया, तो वह मर गया। तब हम रोते-रोते घर गए तो हमने उस मरने वाले लड़के के पिता से कहा ही नहीं। हमने अपनी माता से कहा। तो माता ने एक चांटा लगाया और मैं रोने लगा। तब हमारा रोना हमारे पिताजी ने सुना तो उन्होंने भी एक चांटा लगाया और कहा अबे क्या हुआ? क्यों रोता है? तब मैंने कहा कि मेरे मित्र को सांप काट खाया।

सारे गांव में ढिंढोरा पिट गया कि वो मर गया। तब उसके पिताजी ने मेरे से पूछा, मैंने कहा कि मुझे क्या मालूम। तब उसके पिता ने रिपोर्ट कर दी। तब पुलिस ने कहा कि, तूने उस बच्चे को मारा। तब मैंने रोते हुए कहा कि, मुझे कुछ भी मालूम नहीं। तब पुलिस ने कहा कि, यह बच्चा क्या मार सकता है? तो वह झगड़ा ख़त्म हो गया।

□ रामदयाल पाटीदार, सातवीं, बोतलगंज, मंदसौर

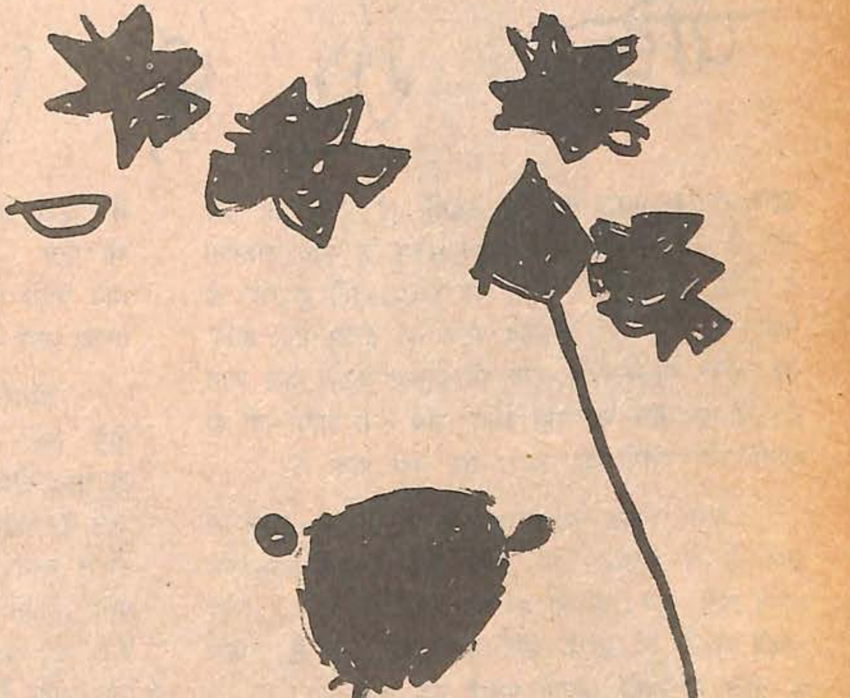

स्वाति, स्याग, छह वर्ष, देवास

पतंग के पीछे

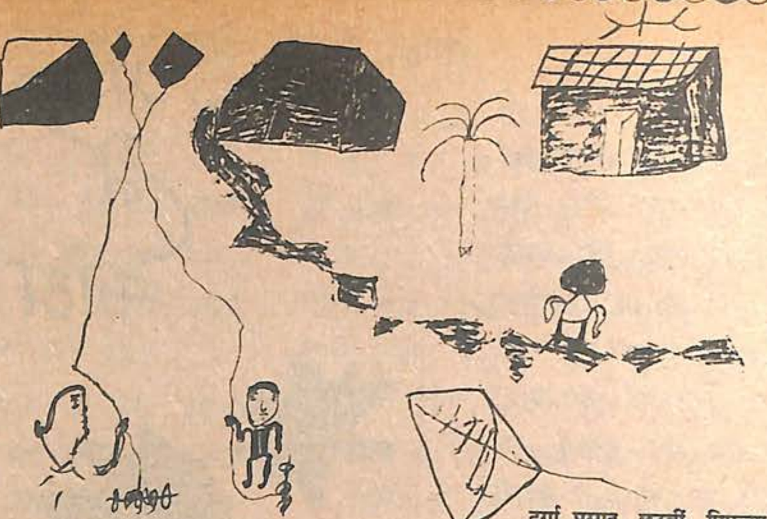
दुर्गा प्रसाद, छठवीं, पिपल्या स्टेशन, मंदसौर

जब लड़के पढ़ते हैं और उड़ती हुई पतंग को देख लेते हैं, तो उनका आधा ध्यान पतंग के साथ लहराता है। वैसे तो जिसको पढ़ने की इच्छा होती है वह तो पढ़ लेता है। और जिसको पढ़ने की इच्छा नहीं होती, वह अपने मां-बाप से कुछ भी बहाना करके चले जाते हैं। वे तब तक घर नहीं आते, जब तक शाम नहीं हो जाती और पतंगों का उड़ना बंद नहीं होता है।

जब उनकी पढ़ाई नहीं हो पाती तब स्कूल में जाने के बाद मास्टर जी डांटते हैं। तो कई दिन तक स्कूल नहीं जाते। इसका कारण यह है कि माता - पिता अपने बच्चों की तरफ कोई ध्यान नहीं देते हैं। पतंग के पीछे ही बच्चे अपनी पढ़ाई नहीं कर पाते।

वैसे तो हमें पतंग भी उड़ाना चाहिए, लेकिन अपनी पढ़ाई करने के बाद। लेकिन कई बच्चे बाद में पढ़ लेंगे, यह सोचकर अपना समय ऐसे ही गुजार लेते हैं। कक्षा में भी पढ़ाई अच्छी चल रही है। मास्टर जी भी पढ़ा - लिखा रहे हैं। और बच्चे कुछ और की बात करेंगे या उन्हें कोई उड़ती हुई पतंग दिख गई तो उनका ध्यान पढ़ाई को छोड़कर पंतग के साथ लहराता है।

अगर कोई पतंग कट गई और बच्चे उसके पीछे दौड़े, कहीं डोर लूटते समय अंगुलियां कट जाती हैं, तो कहीं दौड़ते - दौड़ते आपस में टकराकर लड़के गिर जाते हैं, लड़ाई - झगड़ा शुरू कर देते हैं। कहीं दौड़ते - दौड़ते बच्चे कुछ भी ध्यान नहीं देते। उन्हें तो केवल पतंग दिखती है और किसी नाली या गटर में गिर जाते हैं। और पतंग किसी एक के हाथ में आता है या फट जाता है।

ऐसे तो पतंग उड़ाना भी चाहिए, उसमें मज़ा भी आता है। पर समय - समय पर उड़ाना चाहिए।

☐ अशोक मर्सकोले, आठवीं, देवास

नल के पीछे

हमारे गांव में ड्रिलिंग मशीन आई, तो सारे गांव के लोग इकट्ठे हो गए और लोगों ने कहा कि यहां पर मशीन लगा दो। तो उन्होंने कहा कि आर्डर नहीं है, हम मशीन नहीं लगाएंगे। तो गांव के कई लोगों ने उन लोगों को मारा और मशीन के कांच फोड़ दिए। तो उनने रिपोर्ट कर दी और गांव के लोग ठांणे में बंद हो गए।

☐ सुंदरलाल, छटवीं, मानकुंड, देवास

अच्छे चित्र

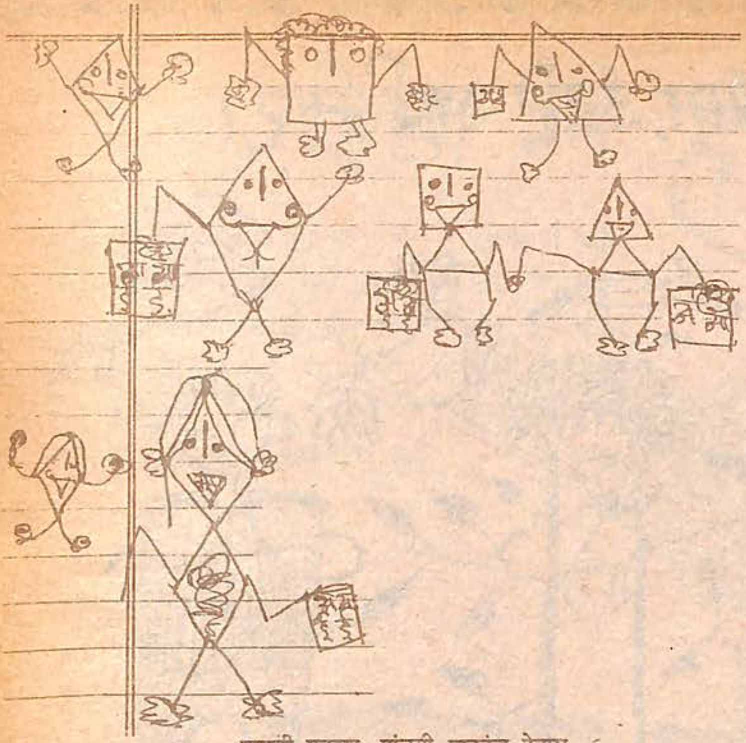

कुमारी प्रकाश, पांचवी, मानकुंड देवास

शीशपाल, मंदसौर

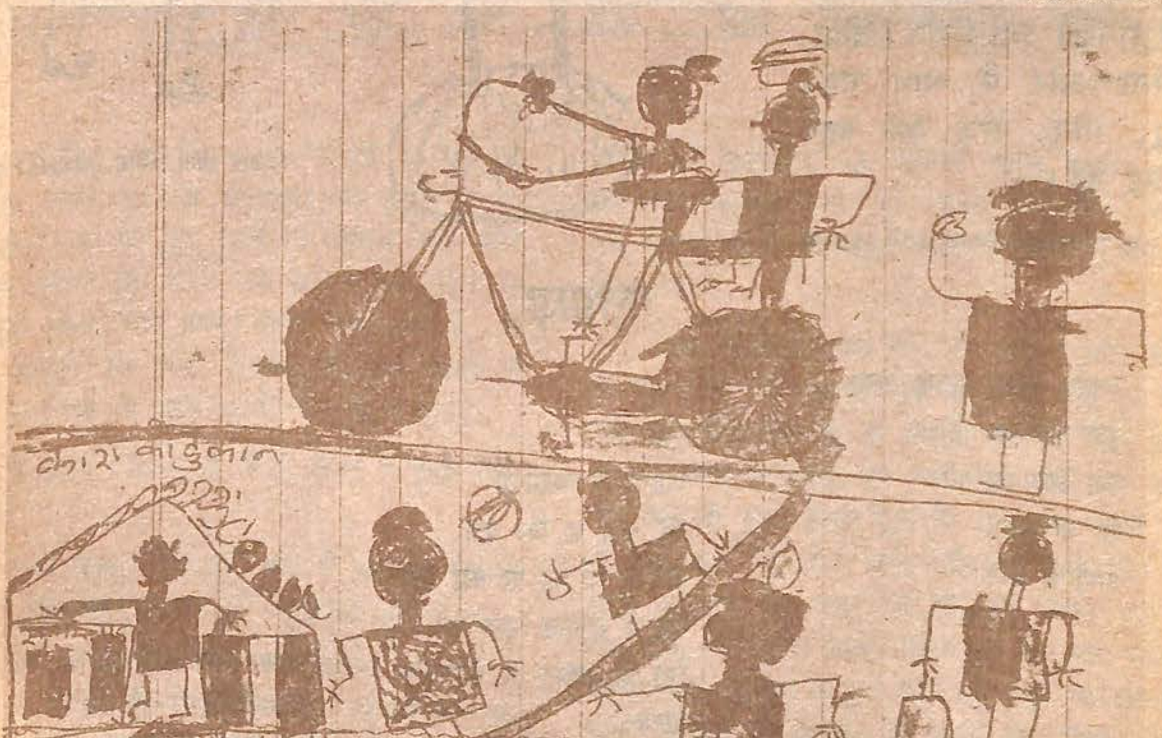

नाहरसिंह, सातवीं, मंदसौर

हमने खाए आम, उनने खाई मार!

एक समय की बात है। जब मैं पांचवीं कक्षा में पढ़ती थी। हमारे स्कूल के पास ही एक आम का बगीचा था। एक बार हमने तय किया कि आज हम आम तोड़ने जाएंगे। मेरे दोस्त दीपू, मीनू, दीपा, सरिता और मैं, हम सब आम तोड़ने बगीचे गए। दीपू, मीनू, संजू पेड़ पर चढ़ गए। उस वक़्त माली सो रहा था। हम सब आम खाने में मग्न थे। उसी वक़्त माली जाग गया। उसने हम सबको देख लिया। दीपा, सरिता और मैं भाग गईं। दीपू, मीनू, संजू की बहुत पिटाई हुई।

□ कुमारी स्वर्णलता तिवारी, छटवीं, सोहागपुर

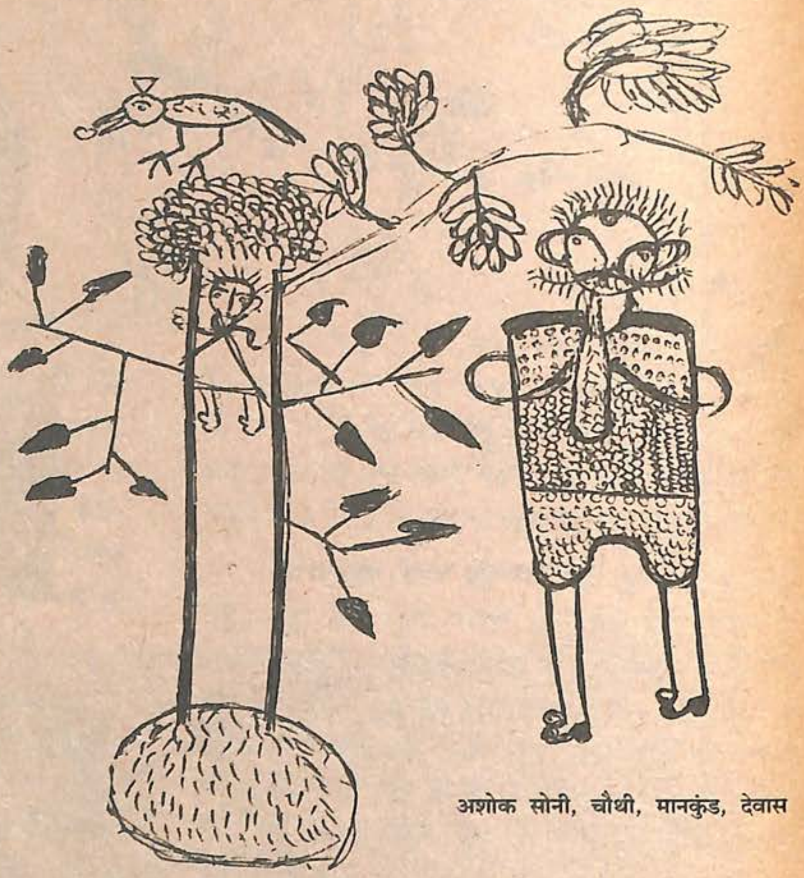

अशोक सोनी, चौथी, मानकुंड, देवास

पतझड़

पतझड़ आया, पतझड़ आया
झड़ गए सब पत्ते
जब आए नए पत्ते
रंग था लाल,
अभी थे बच्चे।

पतझड़ के मौसम में
पेड़ खड़ा था बिन पत्ता
अब न था पेड़ पर कोई पत्ता
धूप से झुलसता भूखा पेड़
ऐसा था पतझड़ का मौसम,
बेरहम।

मौसम आया गर्मी का,
निकलीं कोपलें नई जब,
पेड़ हुआ हरा-भरा
मानों देता धन्यवाद
ग्रीष्म को!

□ अपूर्व त्रिवेदी, दस वर्ष, इंदौर

ऐसा भी होता है!

कुछ समय पूर्व की बात है। तब मैं नवमीं में पढ़ता था। गांव में आठवीं तक ही स्कूल होने के कारण मुझे दस किलोमीटर दूर बेलगहना पढ़ने जाना पड़ता था। ट्रेन ही एक मात्र माध्यम था आने जाने का। मेरे साथ कई और लड़के भी जाते थे। सुबह आठ बजे जाते और शाम सात बजे आ जाते।

राजेश, धार

उस दिन एक शिक्षक के पिताजी की मृत्यु हो जाने के कारण दो बजे ही स्कूल की छुट्टी हो गई थी। तीन बजे एक ट्रेन आती थी लेकिन हमारे गांव के छोटे स्टेशन के कारण नहीं रूकती थी। फिर भी हम सब स्टेशन चले आए। हमारे एक साथी ने, जो काफ़ी साहसी था, कहा, "चलो यार इसी गाड़ी से चलते हैं। गांव के आते ही मैं चैन खींच दूंगा।"

मैं बोला, "इसमें तो काफ़ी ख़तरा है कहीं पकड़े गए तो!"

उसने कहा, "अरे नहीं यार, मैं इस सब मामलों में ट्रेंड हूं। तुम सब चिंता मत करो। कुछ नहीं होगा।"

हम सब उसकी बात पर विश्वास कर ट्रेन में चढ़ गए। लेकिन गांव पहुंचते ही एक आर.पी.एफ. का सिपाही (रेल्वे पुलिस) आकर हमारे पास ही खड़ा होकर सिगरेट पीने लगा। हमारे साथी की तो हिम्मत ही नहीं हुई चैन खींचने की। खींचता तो डंडे पड़ते। ट्रेन धड़धड़ाती हुई स्टेशन पार कर गई। हम सबके होश उड़ गए। पर अब कर भी क्या सकते थे। ट्रेन सीधी 48 किलोमीटर दूर पेंड्रारोड जाकर रूकी। हम सब मुंह लटकाए उतर गए। उतरते ही हमने अपने उस साहसी साथी को बहुत डांटा, तो वह हम पर ही गुस्सा गया।

हम लोगों के पास पैसे भी नहीं थे और जोरों से भूख लगी थी। वापस जाने के लिए कोई ट्रेन भी नहीं थी। हम लोग यूं ही स्टेशन पर बैठ गए। जब स्टेशन मास्टर ने काफी देर तक हम लोगों को वहां बैठे देखा तो उसने हमसे पूछा कि तुम लोग इतनी देर से यहां क्यों बैठे हो। हमने पूरी बात बता दी। वे हमारे बार-बार मना करने पर भी, हमें अपने घर ले गए और हम सबको खाना खिलाया। हम सब स्टेशन वापस आए। संयोग से एक मालगाड़ी खड़ी थी। स्टेशन मास्टर ने गार्ड को बोलकर हमें उसमें चढ़ा दिया। हमने मन ही मन स्टेशन मास्टर का आभार व्यक्त किया। घर पहुंचने पर अच्छी खासी डांट पड़ी। उसके बाद फिर मैं कभी उस ट्रेन पर नहीं चढ़ा।

☐ योगेश मिश्र, ग्यारहवी, टेंगनमाड़ा, बिलासपुर

अच्छे चित्र

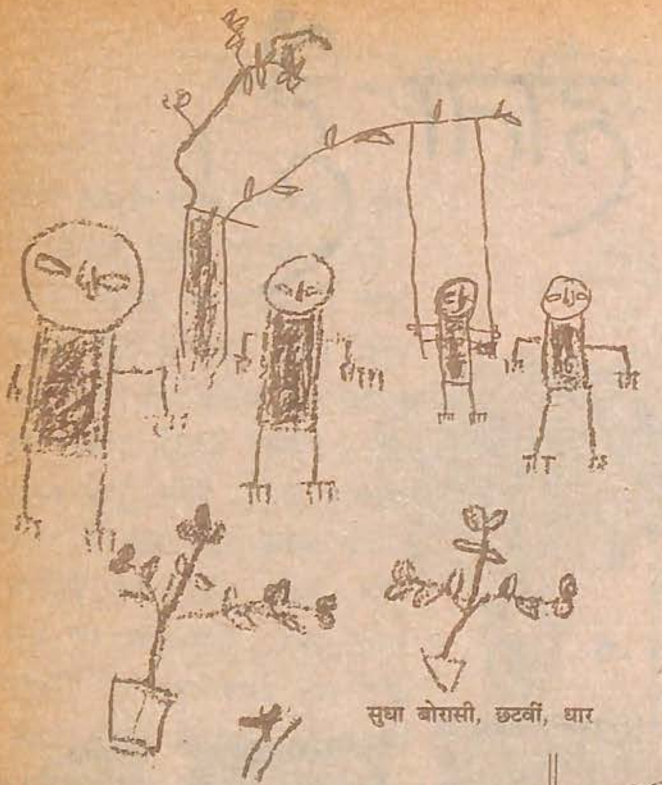

सुधा बोरासी, छटवीं, धार

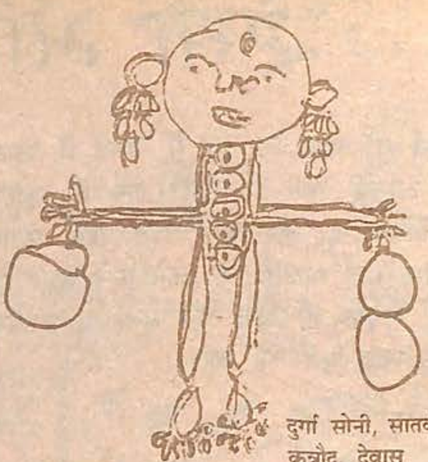

दुर्गा सोनी, सातवीं,
कन्नौद, देवास

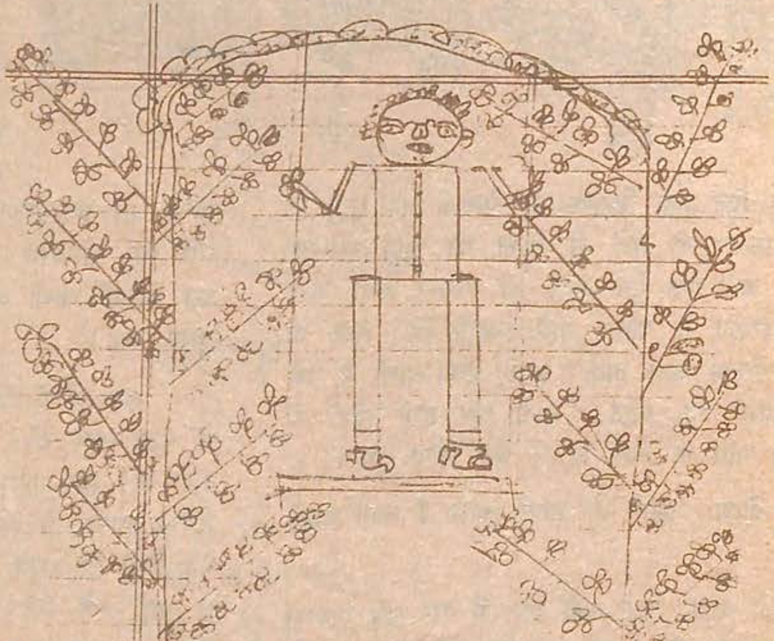

बबीता, छठवीं, देवास

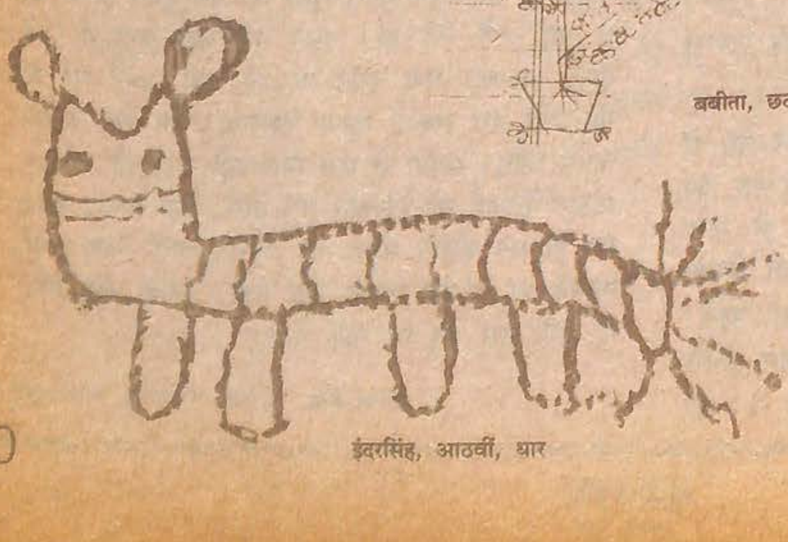

इंदरसिंह, आठवीं, धार

अच्छे चित्र

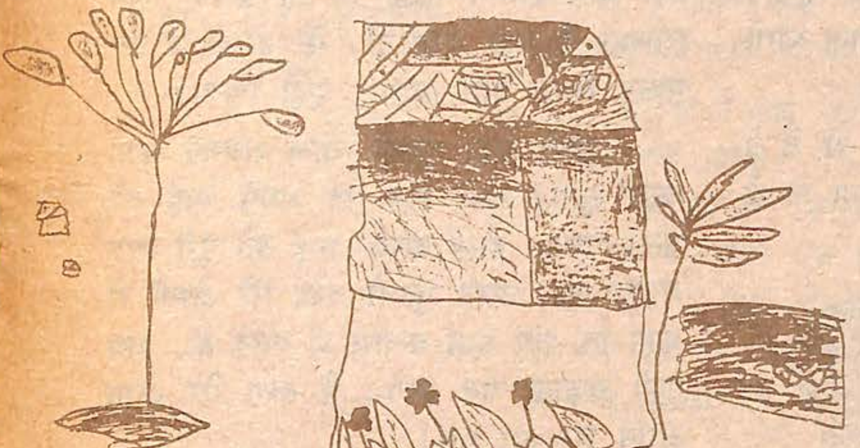

टीना मिश्रा, पांचवीं, भोपाल

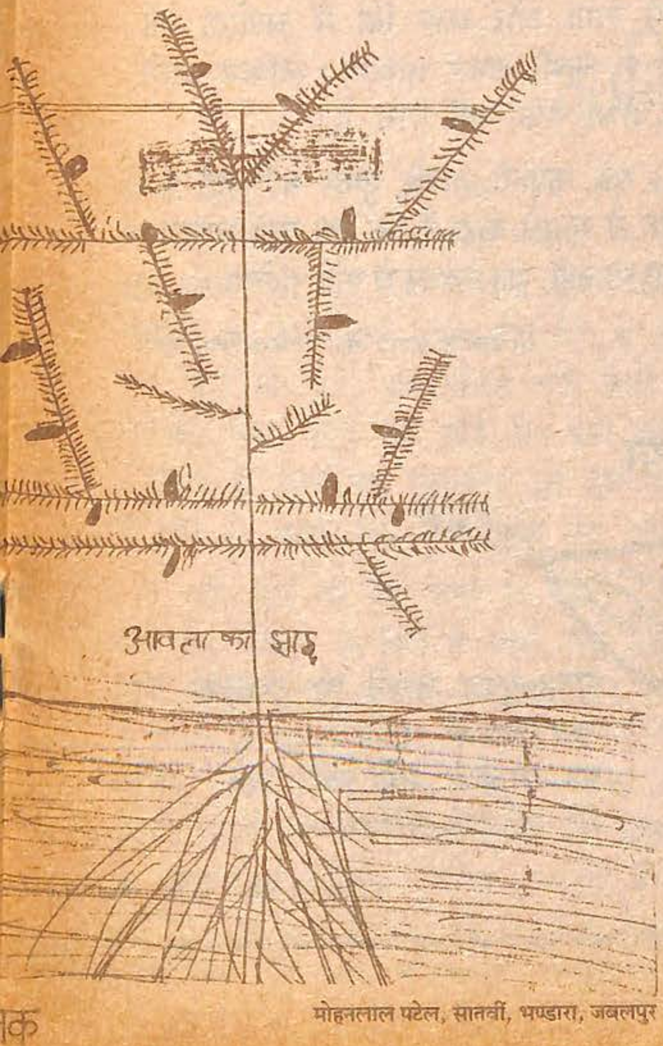

मोहनलाल पटेल, सातवीं, भण्डारा, जबलपुर

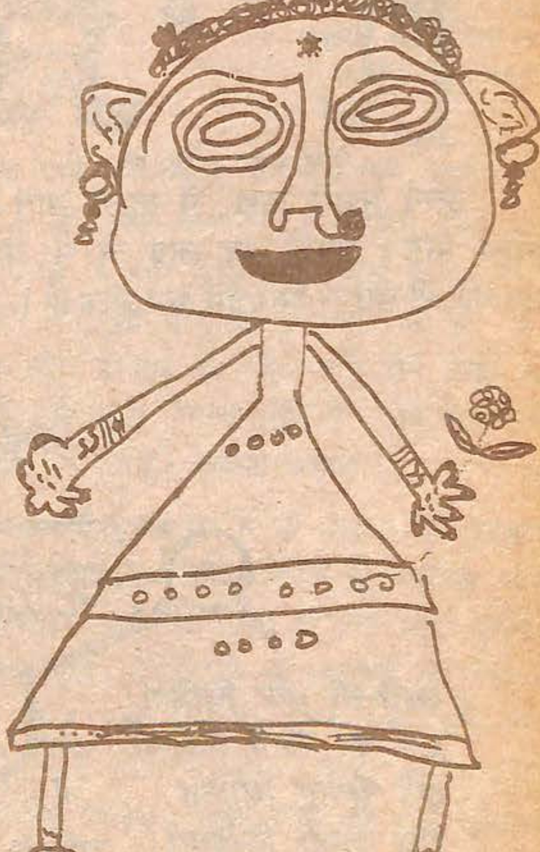

मनस्विनी, गोरेगांव, बंबई

रूमाल ने करवाया झगड़ा

मेरे स्कूल में रफीक नाम का एक लड़का पढ़ता है। वह मुझसे बहुत मार - पीट करता है। एक दिन मैं स्कूल में रूमाल ले गया। स्कूल की आधी छुट्टी हुई। सब लड़के खेल रहे थे। रफीक ने मुझसे मेरा रूमाल मांगा। थोड़ी देर बाद मैंने उससे अपना रूमाल मांगा तो उसने देने से इंकार कर दिया।

मैंने उससे कहा, देख सीधे से दे दे वरना मैं मेरे दोस्तों को बुला लाऊंगा तो वे तेरी पीठ सही कर देंगे।

दिनेश कुमार, सातवीं, धार

उसने मुझसे कहा, मैं काला नाग हूं, काला नाग। सामने आ जाए तो मैं अपने बाप को भी डस लूं फिर तुम क्या चीज़ हो।

मैं अपने सब दोस्तों को बुला लाया वह भागा। मेरे सब दोस्त उसके पीछे दौड़े। काफी दौड़ने के बाद पकड़ में आ गया। मैंने उससे कहा, तू काला नाग है तो ले तेरा बाप सामने खड़ा है, ले डस। उसने मुझको दो छड़ी जमा दी। मेरे दोस्तों ने उसे पकड़ लिया और रूमाल छुड़ा लिया।

उसने कहा मुझसे, कल सबको मज़ा चखा दूंगा। दूसरे दिन वह अपने भाई को बुला लाया। हमने उसके भाई को पूरी बात समझा दी। उसने मुझसे तथा मेरे दोस्तों से कहा कि तुम एक क्लास में पढ़ते हो, अब ऐसी मज़ाक मत करो। मैं तथा मेरे दोस्त अपने घर आ गए।

दूसरे दिन वह मेरे दोस्तों से फिर बोलने लगा और कहा कि मैं अशोक को कभी न कभी ज़रूर मारूंगा। लेकिन उसने मुझे अभी तक नहीं मारा है।

यह कहानी अभी ख़त्म नहीं हुई है। रफीक ने मुझसे कहा है कि वह मुझे मारेगा। मारेगा या नहीं, यह नवंबर में पता चलेगा।

☐ अशोक कुमार, सातवीं, करवाड़िया, देवास

नन्ही चिड़िया

छोटी-सी एक चिड़िया
रात को सोती चिड़िया
दाने चुगती चिड़िया
चूंचूं करती चिड़िया!

जगदीश चंद्र, बारह वर्ष, धार

सुबह-सुबह आईने पर टुकटुक
खूब सताती मईया
यह चिड़िया कोई और नहीं
मेरे घर की गौरैया!

☐ श्यामल सरस, नौ वर्ष, दुर्ग

दो दुश्मन

दो दुश्मन थे एक कैलाश और महेश। वे दोनों बहुत लड़कर भागे। आगे कैलाश, पीछे महेश। तो महेश ने कहा, अरे ठिंगना रूक जा, तू भागकर कहां जाएगा! तुझे इतना मारूंगा कि याद करेगा।

कैलाश ने कहा, अरे पेटू तू मुझे क्या मारेगा। चल आ जा मेरे पीछे आ जा। फिर महेश ने दो पत्थर उठाकर एक पत्थर उसकी पीठ पर मारा, तो कैलाश को ऐसा पड़ा कि जैसे पहाड़ पर से पत्थर लुड़का और महेश भाग गया।

☐ पीरूमल मालवीय, छटवीं, मानकुंड, देवास

पप्पूलाल सोलंकी, तेरह वर्ष, लसूड़िया राठौर, मंदसौर

कर्फ्यू के दिन

हमारे देवास में कर्फ्यू लगा था। तब सभी जगह के लोग घर में थे। किंतु हमारे मोहल्ले के लोग सब बाहर खड़े थे। और जैसे ही पुलिस आती, मोहल्ले के कोने वाले लोग बता देते थे और सब अंदर हो जाते। जब पुलिस चली जाती तो धीरे-धीरे सब बाहर आ जाते थे। इसी चहल - पहल में हमारे एक किराएदार जो एक कमरे में रहते थे, उनके यहां एक घटना घट गई।

वो ऐसे थी कि कमरे में पति - पत्नी रहते थे। दीवाली के दिनों में उनकी पत्नी मायके चली गई थी। पति जी घर में अकेले थे। कर्फ्यू के कारण वे सब काम जल्दी-जल्दी कर रहे थे। क्योंकि कर्फ्यू में ढील सात से नौ तक थी। उनको अपने मामा के यहां जाना था, जिनका घर ज़्यादा दूर नहीं था। जल्दी - जल्दी में ही वह गैस पर दूध गरम करने के लिए रखकर चला गया और बाहर से ताला लगा गया। वह करीब सात बजे चला गया। लगभग आठ बजे हमारे घर न जाने कैसी दुर्गंध आने लगी। हमने पड़ोस से पूछा तो वहां से नहीं आ रही थी। सब लोग परेशान हो गए। तभी मैंने देखा कि कहीं से धुंआ निकल रहा है। मैंने पापा को बताया, तो उन्होंने सबको बताया।

तभी उनके घर में से टन्ऽऽऽ की आवाज़ आई। पापा ने दरवाज़ा तोड़ा तो एकदम सारी हवा बाहर आ गई। देखा तो हमें सारा मामला समझ आया। हमने टंकी का रेग्यूलेटर बंद किया। पर तपेला नहीं निकला। जब वह दूसरे दिन आया, तब पापा ने उससे कहा, आइंदा ऐसा नहीं होना चाहिए। उसने तपेले को बड़ी मुश्किल से निकाला और फेंक दिया।

☐ चेतना खरे, नवमीं, देवास

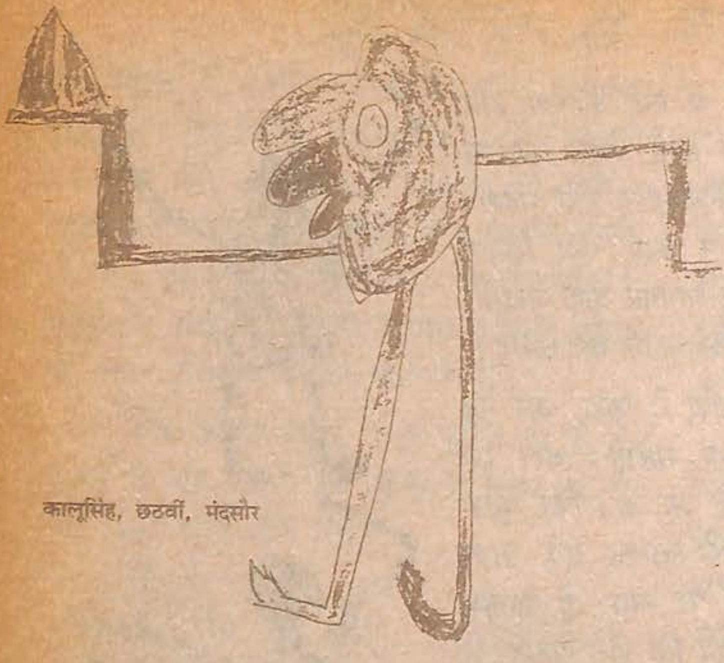

कालूसिंह, छठवीं, मंदसौर

अच्छे चित्र

सुरेशचंद रावत, आठवीं,
तिलोंजरी, मुरैना

मनोज, पहली, देवास

मजदूर संगठन

मजदूरों की धाकड़ी (मजदूरी) में दिनों दिन परिवर्तन हो रहा है।

सन् 84, 85 एवं 86 या इससे पहले मजदूरों को मात्र पांच - छह रुपए दिन भरके दिए जाते थे या तीन पाई (किलो) ज्वार देते थे। इतने में अपना पेट भरते थे। 87 में फिर उन्होंने सोचा क्यों न हम सुबह नौ बजे से छह बजे तक काम करें और सात - आठ रुपए में। तब किसानों ने कहा कि इतना हम नहीं देंगे। तब मज़दूरों ने काम करना बंद कर दिया। जब किसानों के खेत उजड़ने लगे, तब उन्होंने हां करके उन्हें बुलाया।

फिर भी मजदूरों का ठीक से पालन - पोषण नहीं होता था। फिर उन्होंने 88 में आंदोलन उठाया और कहा कि दस रुपए से कम में काम नहीं करेंगे। और दस बजे से साढ़े पांच बजे तक काम करेंगे।

तब किसानों ने एका बनाया कि ये तो हर वर्ष परेशान करते हैं। हम एक दूसरे को मदद देकर काम चलाएंगे। उस समय कांकड़े लग रहे थे। एक दिन एक कृषक के यहां सब जाते फिर दूसरे के यहां। इस प्रकार करने लगे। तब मज़दूर बाहर गांव जाने लगे।

तब किसानों ने एका बनाया की, इनको अपने खेतों में मत घुसने दो। खेतों से लकड़ी मत लाने दो। तरह - तरह के दबाव उन पर डाले गए। लेकिन इसी बीच जिस किसान के यहां कोई काम करने वाला नहीं था वह घबराया। बोनी पिछड़ने लगी। तब उसने किसी किसान को पता नहीं चलने दिया और मजदूरों के घर जा-जाकर उनको भड़काया। कहा कि मैं तुम्हें आठ रुपए दूंगा तब मजदूर चले गए। इसी तरह 25% किसानों ने ऐसा ही किया। तब सबने ऐसा ही किया। बोनी तो आठ रुपए में हो गई।

फिर मौसम आया निंदायी का। 88 में भारी वर्षा के कारण सब किसानों के खेतों में चारा हो गया। फिर मजदूरों ने सोचा कि हमें दस रुपए से कम में जाना ही नहीं चाहिए फिर किसान अड़े रहे और पिछड़ने लगे। जैसा बोनी के समय किया, वैसा ही लोगों ने फिर किया। पिछड़ने वाले किसान दस रुपए में मजदूर ले जाने लगे। कुछ किसानों ने और गांव के पटेल साहब ने बाहर से मजदूर लगाकर काम चला लिया।

किसानों ने संगठन बनाए, पर सब टूट गए। लेकिन मजदूरों के संगठन नहीं टूटे और वो सफल रहे।

अब दस रुपए दिए जाते हैं। लेकिन जो मजदूर छह बजे सुबह से शाम छह बजे तक काम करता है, उसे पंद्रह रुपए दिए जाते हैं। पर जो टंकी स्प्रे करता है (दवा झिड़कता है) वह बीस रुपए लेता है। सन् 88 में टंकी स्प्रे वाले पंद्रह रुपए तथा आठ बजे से शाम छह बजे तक काम करने वाले को बारह रुपए दिए जाते थे। लेकिन उन्होंने एका बनाकर बारह - पंद्रह की जगह पंद्रह - बीस रुपए करवाए। अब इसी तरह से दस, पंद्रह, बीस रुपए का माहौल चल रहा है।

कुछ मजदूर बाहर भी जाते हैं जो ज़्यादा पैसे कमाकर लाते हैं। मुझे ऐसा लग रहा है कि जिस प्रकार संगठन बनाकर पैसे बढ़वाए जा रहे हैं। उसी तरह वो और भी बढ़वाएंगे और बढ़ेंगे भी। पर उन्हें यह पता नहीं है कि सरकार ने प्रति मजदूर उन्नीस रुपए के करीब की दर रखी है, कानून बनाया है।

इसी तरह कपास बिनाई में भी मजदूरों ने पैसे बढ़वाए हैं।

84 के पहले जब वरलक्ष्मी कपास नया - नया ही आया था, तब एक पसेरी (पांच किलो) के पच्चीस पैसे देते थे। एक मजदूर अधिक से अधिक दो या ढाई रुपए में ही दिन भर कपास बीनता था। फिर 84 में भाव बढ़ा। पहली बिनवाई में पचास पैसे पांच किलो कपास के। दूसरी बिनवाई में एक रुपया, तीसरी बिनवाई में सवा रुपया, तथा आखिरी बिनवाई में अधिक से अधिक से डेढ़ रुपया देते थे।

इसी तरह मजदूर बाईयां किसानों से लड़ती रहीं। 85-86 में फिर मजदूरी बढ़ी। पहली बिनवाई में पचहत्तर पैसे, दूसरी में एक रुपया, तीसरी बिनवाई में डेढ़ रुपए तथा आखिरी में दो रुपए प्रति पसेरी हुआ।

इसके बाद भी थोड़ी-सी मजदूरी बढ़ी अब दिन भर सुबह छह बजे से शाम छह बजे तक कपास

बीनते हैं फिर भी उन्हें दस रुपए नहीं मिल पाते। ज़्यादा से ज़्यादा पांच, छह, सात रुपए। कोई - कोई महिला नौ-दस रुपए तक बना सकती है, वह भी बहुत फुर्ती से हाथ चलाने पर और अगर सुस्ताती नहीं है तो।

जिस तरह सब मजदूरों ने संगठन बनाया और दर बढ़वाई उसी तेजी से यह नहीं हो सका, क्योंकि सिर्फ महिलाएं ही कपास बीनती है, पुरुष बहुत कम।

यह तो एक गांव की कहानी है, इसी तरह सब मजदूर एक साथ उठ आएं तो बहुत कुछ कर सकते हैं, लेकिन वो ग़रीब होने के कारण डरते हैं।

☐ बाबूलाल चौधरी, ग्यारहवीं, सतवास, देवास

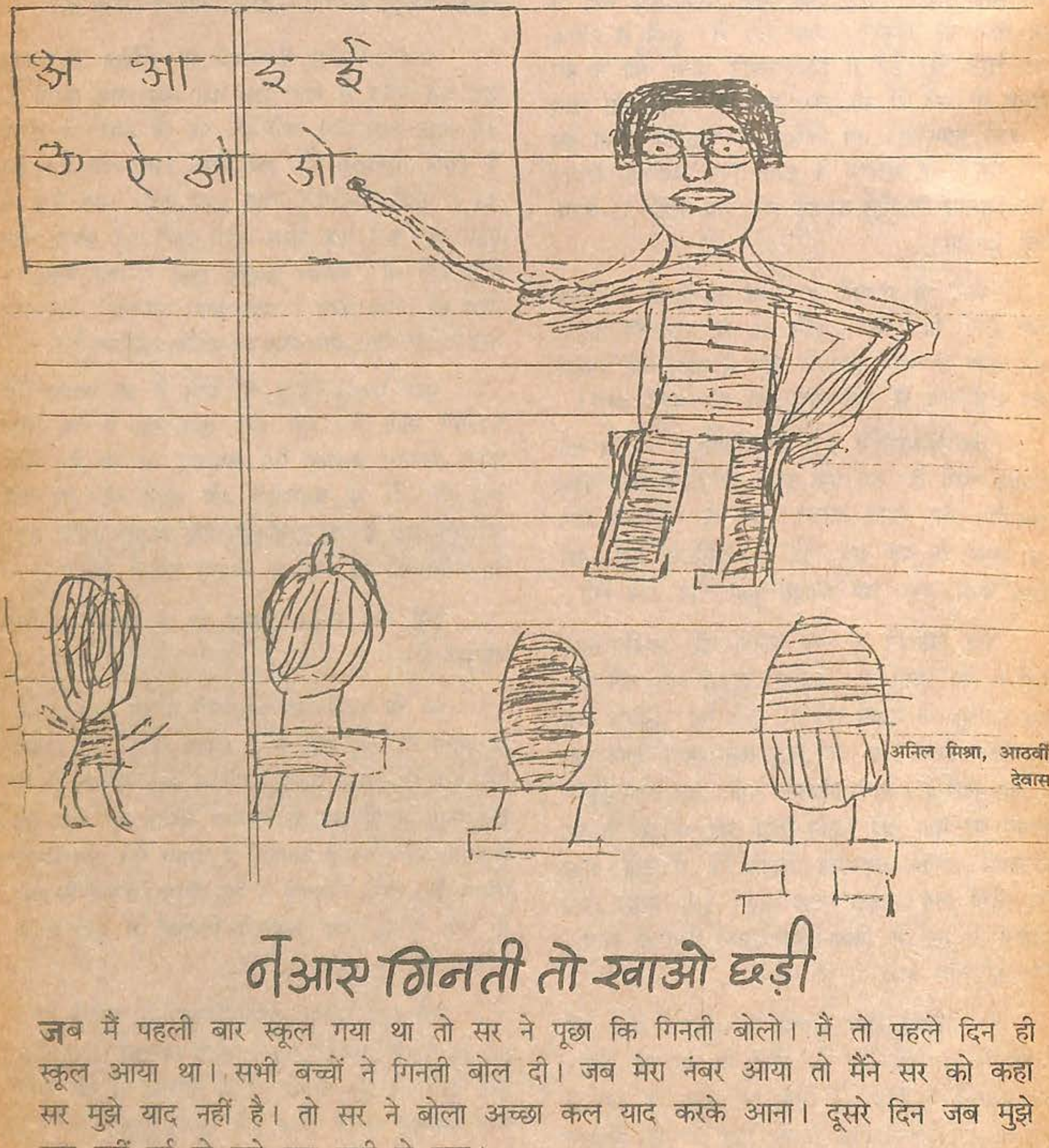

अनिल मिश्रा, आठवीं, देवास

न आए गिनती तो खाओ छड़ी

जब मैं पहली बार स्कूल गया था तो सर ने पूछा कि गिनती बोलो। मैं तो पहले दिन ही स्कूल आया था। सभी बच्चों ने गिनती बोल दी। जब मेरा नंबर आया तो मैंने सर को कहा सर मुझे याद नहीं है। तो सर ने बोला अच्छा कल याद करके आना। दूसरे दिन जब मुझे याद नहीं हुई तो मुझे एक छड़ी से मारा।

☐ राजेश डाबी, आठवीं, नरवर, उज्जैन

धारावाहिक-10

भूगर्भ की यात्रा

अब तक तुमने पढ़ा

प्रोफेसर लिडेनब्रॉक अपने सहायक और पथ प्रदर्शक के साथ भूगर्भ के अंदर 6000 फुट की गहराई तक उतर चके थे। रास्ते में उन्हें पशुओं और पौधों के छापे दीवारों पर बने मिले। उनके पास पानी ख़त्म हो चला था। सबसे अधिक परेशान था सहायक। अब आगे पढ़ो...

मैं बहुत परेशान था। और मुझे यह भी मालूम था कि कुछ होना जाना था नहीं। हमारी सहायता भी कोई नहीं कर सकता।

वापस लौटने का कोई प्रश्न ही नहीं रह गया था अब। हम बाह्यजगत् से पूरे पूरे छः मील दूर थे। मुझे लग रहा था कि मैं उसके बोझ से दबा जा रहा होऊं।

कुछ घंटे बीत गए। ज़रा सी किसी तरह की आवाज़ भी इन दीवारों को पार करके हम तक न पहुंची। घना अंधेरा छाया हुआ था उस समय।

एकाएक कुछ खटके की आवाज़ सुनाई दी। हैंस अपने हाथों में लैंप लिए हुए हमें छोड़कर कहीं जा रहा था।

वह क्यों जा रहा था? क्या सच ही हैंस हमें छोड़ रहा था? चाचा जी सोए हुए थे। मैंने उन्हें पुकार कर जगाने की कोशिश की। लेकिन आवाज़ गले ही में फंस कर रह गई। फिर अंधेरा छा गया और आवाज़ भी बंद हो गई।

"हैंस हमें छोड़कर चला गया! हैंस, हैंस!" मैं पूरी शक्ति से चीख़ा था, फिर भी ये शब्द जैसे मुंह

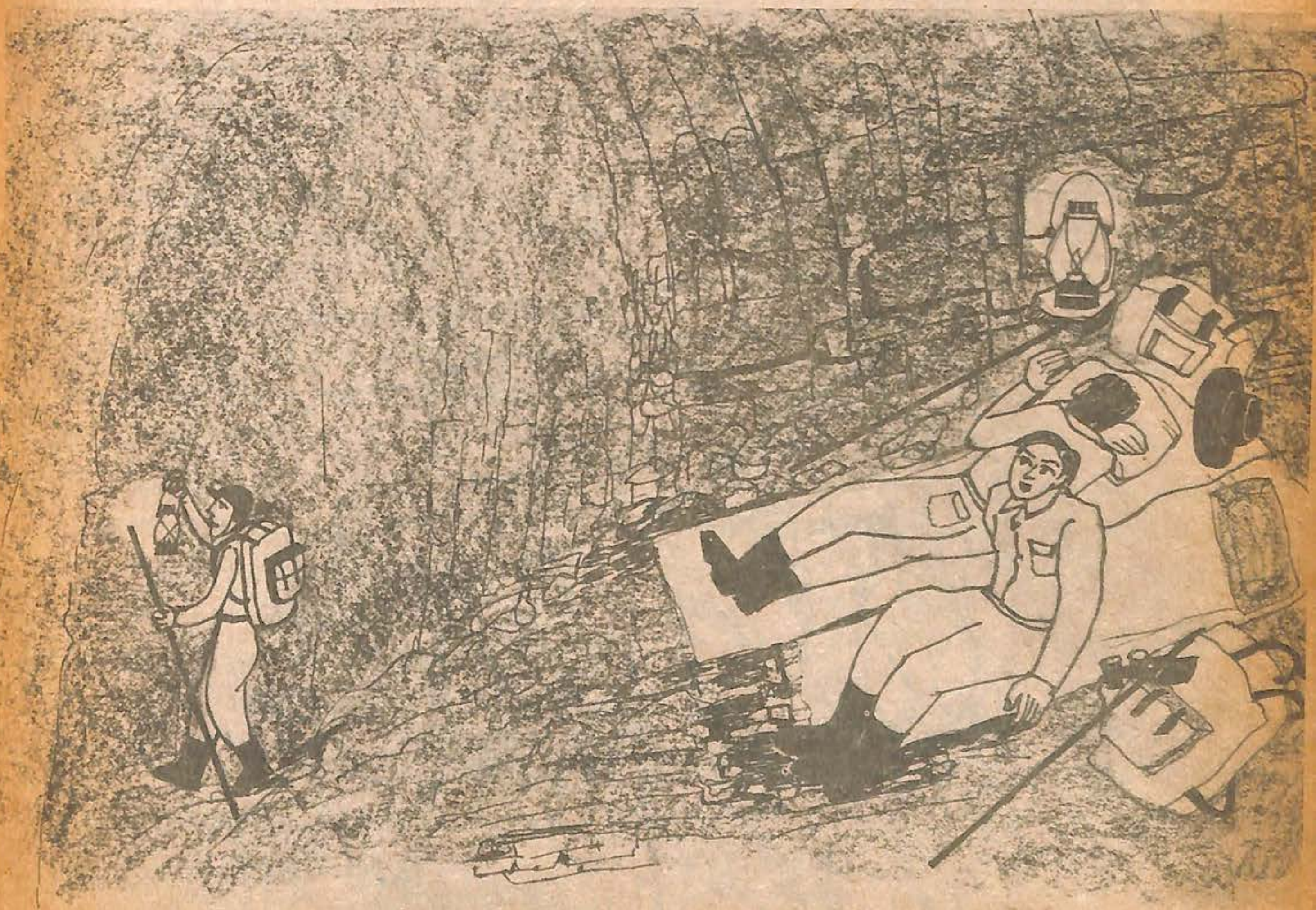

में ही फंस कर रह गए। ज़रा भी आवाज़ बाहर न निकली।

हैंस ऊपर रास्ते से होकर नहीं बल्कि नीचे की तरफ जा रहा था। ये क्षण तो अच्छे ही थे। उसने हमारा साथ हमारे भले के लिए ही छोड़ा होगा। उसके जाने का कारण क्या था? क्या उसने कोई ऐसी चीज़ देखी या सुनी थी जिसे मैं और चाचा जी नहीं सुन सके थे?

लगभग एक घंटे तक हैंस के चले जाने का कारण समझने की कोशिश करता रहा। मेरे मन में बड़े ही मूर्खतापूर्ण विचार आने लगे और मुझे लगने लगा कि अब मैं पागल हो जाऊंगा।

अंत में किसी के पैरों की आहट सुनाई दी। हैंस ऊपर लौट कर आ रहा था। दीवारें एक बार फिर प्रकाश से चमकने लगीं। हैंस भी दिखाई दिया। वह चाचा जी के पास गया और धीरे से उनकी बांह पकड़कर हिलाते हुए उन्हें जगाया। चाचा जी उठ बैठे और जगाने का कारण पूछने लगे।

उसने बताया कि नीचे वह पानी का पता लगाने गया था और पता लग भी गया।

हम फौरन चलने के लिए तैयार हो गए। घंटे भर में हम 2000 फुट की गहराई तक उतर चुके थे। तभी मुझे चट्टानों से आता हुआ अजीब-सा स्वर सुनाई दिया। यह किस चीज़ का स्वर था? आधा घंटे तक और चलते रहने पर भी पानी कहीं पर भी नहीं मालूम दिया।

मैंने तो अब पानी मिलने की आशा छोड़ ही दी थी लेकिन चाचा जी का कहना था कि हैंस ने गलती नहीं की थी और वह आवाज़ भी बहते हुए पानी ही की थी।

"यह पानी के किसी सोते की आवाज़ है" चाचा जी बोले, "इसमें कोई संदेह नहीं।"

हम और भी तेज़ी से चलने लगे। पानी की आवाज़ अब बढ़ती ही जा रही थी। अब तबियत ठिकाने पर आई थी। लगता था कि अब पानी किसी चट्टान से फूट पड़ने में देर नहीं।

आधा घंटा और बीत गया था। और इतनी देर में हम तीन मील और चल चुके थे। कुछ दूर आगे बढ़ने पर आवाज़ में कमी होने लगी जिससे स्पष्ट हो गया था कि यदि और आगे बढ़े तो पानी से दूर हो जाएंगे।

हम कुछ दूर वापस लौटे। हैंस एक स्थान पर रुक गया।

मैं दीवार के सहारे बैठ गया। पानी हम से दो फुट की दूरी पर था। लेकिन बीच में यह चट्टान की दीवार थी। एक बार फिर मैं निराश हो गया।

हैंस ने मेरी ओर देखा और कुछ सोच कर मुस्कराया।

उसने लैंप उठाया। मैं उसके साथ हो लिया। उसने दीवार से दो तीन स्थानों पर कान लगा कर सुना। वह पानी का ठीक पता जानने की कोशिश कर

रहा था। आख़िर उसने एक स्थान चुन लिया।

मैं बड़ी उत्सुकता से यह सब देख रहा था कि वह क्या करने जा रहा था। मैं कुछ भी अनुमान न कर सका।

लेकिन शीघ्र ही मेरी समझ में सब कुछ आ गया। मैंने कुदाली उठाकर उसे चट्टान पर मारते देखा। चाचा जी, खुश होकर चिल्लाए, "कैसा होशियार है हैंस! शाबाश हैंस! मुझे यह बात सूझी ही न थी।"

इतनी आसान-सी तरकीब मेरे दिमाग़ में नहीं आई; लेकिन फिर भी ख़तरनाक था यह इरादा। मान लो कि पानी की धारा इतनी तेज़ी से फूट पड़े कि हम सबको बहा ले जाए।

कोई परवाह नहीं। हमें पानी से मतलब।

शीघ्र ही दो फुट गहरा गड्डा बन चुका था। हैंस एक घंटे से अधिक पहले से काम में जुटा हुआ था। मैं बड़ी बेचैनी से रास्ता देख रहा था। चाचा जी मुझसे भी अधिक बेचैन थे। एकाएक पानी की एक धारा बड़ी तेज़ी से फूट निकली और दूसरी तरफ की दीवार से शोर मचाती हुई टकराने लगी।

हैंस अचानक चीख़ उठा। मैंने भी जब पानी में अपना हाथ डाला तो मेरे मुंह से भी चीख़ निकली। बात यह थी कि पानी एकदम उबलता हुआ था।

"यह पानी तो गरम है," मैं चिल्लाया।

"बरबाद न करो," चाचा जी बोले "ठंडा हो जाएगा।" शीघ्र ही मैंने पहला घूंट पिया।

उस आश्चर्यजनक क्षण का मैं कैसे वर्णन करूं? हमें कैसा लग रहा था, इसका अनमान तो केवल वही लोग कर सकते हैं जो कई दिन लगातार प्यासे रहे हों। बिना इसकी परवाह किए।"

कुछ क्षण बाद फिर चीख़ा, "इसमें कुछ लोहे जैसा स्वाद है।"

"तब तो," चाचाजी बोले, "यह तंदुरुस्ती के लिए बड़ा अच्छा है।"

"क्यों न इसका नामकरण हैंस के नाम पर ही कर दिया जाय?" मैं बोला।

और उस नदी का नाम 'हैंस नदी' रख भी दिया गया। लेकिन हैंस को इस पर ज़रा सा भी गर्व न था। वह एक किनारे पर सदा की भांति शांत बैठा हुआ था।

"अब," मैंने कहा, "हमें पानी रोक देना चाहिए। पहले अपनी बोतलें भर लें, उसके बाद फिर इसे रोकने की कोशिश करें।"

मेरी सलाह मान ली गई। कुछ रस्सियां और पत्थर छेद में अड़ाकर हमने पानी रोकने की काफी कोशिश की। लेकिन उसे बंद करना आसान नहीं था। पानी इतना गरम था कि हाथ जल जाते थे, इसलिए हमें सफलता न मिल सकी। पानी इतनी तेज़ी से आ रहा था कि हमारे सारे प्रयत्न बेकार जा रहे थे।

तभी चाचाजी बोले, "मैं एक बात सोच रहा हूं।"

"वह क्या?"

"हम इसे बंद करने के लिये इतना परेशान ही क्यों हों?"

"क्योंकि...."

यहां मुझे चुप हो जाना पड़ा क्योंकि कारण बताना कोई आसान काम न था।

"जब हमारी बोतलें फिर खाली हो जाएंगी तो हमें आगे चलकर पानी मिल जाने का निश्चय कैसे हो जाएगा।"

"ठीक है," मैंने कहा "आगे चलकर हमें पानी के लिये परेशान नहीं होना पड़ेगा।"

"अब आए ठीक रास्ते पर तुम।"

मैंने कहा, "अब फिर चल पड़ना चाहिए।"

"अभी नहीं," चाचाजी बोले, "पहले कुछ घंटे आराम कर लेने के बाद।"

मैं भूल गया था कि उस समय रात थी। अच्छी तरह नाश्ता करके हम सब लेट रहे और थोड़ी ही देर में नींद आ भी गई।

दूसरे दिन हम अब तक की सारी परेशानियां भूल चुके थे। सबसे पहिले तो मुझे उस समय आश्चर्य हुआ जब सुबह नींद खुलने पर मुझे प्यास मालूम दी। इसका क्या कारण था? इसका उत्तर मेरे पैरों के पास बहते पानी के सोते ने दिया।

बुधवार 15 जुलाई को हम 21 मील की गहराई में पहुंच चुके थे।

चाचा जी हर घंटे बाद हमारी यात्रा की विशेष बातें लिख लेते थे। ठीक-ठीक समय, तापक्रम, गहराई और दिशा इत्यादि।

"चाचा जी!"

"क्या है मेरे बेटे?"

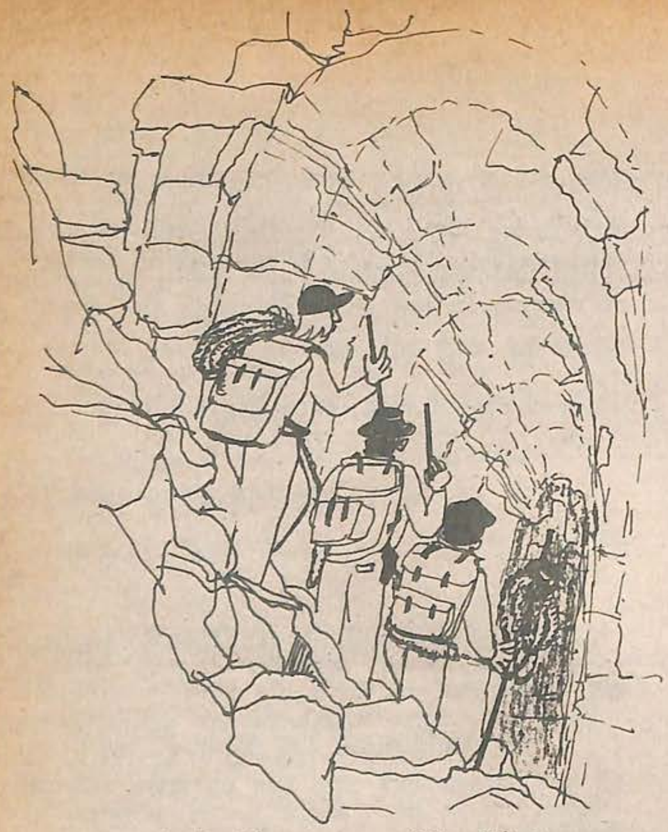

"हम द्वीप के नीचे अधिक गहराई में नहीं हैं।"

"क्या तुम ऐसा समझते हो?"

"हम इसे फ़ौरन् जान सकते हैं।"

इसके बाद मैंने मानचित्र निकाला और तब हमें पता लगा कि समुद्र ठीक हमारे सिर पर है।

चार दिन बाद, शनिवार 18 जुलाई की शाम को हम उससे भी बड़ी एक गुफा में पहुंचे।

दूसरे दिन सुबह जब मैं जगा तो बड़ी बेफ़िक्री थी क्योंकि नित्य की तरह आज तुरंत ही यात्रा पर चलने की आवश्यकता न थी।

पानी का स्रोत हमारे पैरों के पास से होकर बह रहा था। इतनी दूर तक बह कर आने के कारण अब गरम नहीं था।

नाश्ता कर चुकने के बाद कुछ घंटों के लिए प्रोफ़ेसर ने अपने क़ाग़ज-पत्र संभाले और उन्हें ठीक तौर से सजाकर रक्खा।

"सबसे पहले," वे बोले, "मैं उस स्थान का ठीक-ठीक विवरण जानना चाहता हूं जहां पर हम लोग इस समय हैं। वापस लौटने पर इस स्थान का एक मानचित्र बनाने की इच्छा हो रही है।"

"यह तो एक बड़ी महत्त्वपूर्ण बात होगी चाचा जी, लेकिन क्या आप बिल्कुल ठीक-ठीक बना भी सकेंगे?"

"ज़रूर, मैंने हर चीज़ का ठीक-ठीक पता लगा लिया है। इस समय हम अपनी यात्रा के आरम्भ होन वाले स्थान से 255 मील दूर और 48 मील की गहराई में हैं।"

"अड़तालिस मील नीचे?"

"लेकिन विज्ञान के अनुसार तो 48 मील की गहराई तक ही पृथ्वी ठोस रूप में होनी चाहिए।"

"लेकिन तुम देख रहे हो कि विज्ञान का वह सिद्धांत बिल्कुल ग़लत है," प्रोफ़ेसर बोले।

"मैं मानता हूं आपकी बात लेकिन मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है।"

"थर्मामीटर क्या कहता है?"

"27° तापक्रम।"

"इस तरह तुम देख सकते हो कि हम्फ्री डेवी का कहना ठीक था और उनकी बात पर ध्यान देना मेरे लिए अच्छा ही हुआ।"

"चाचा जी," मैं बोला, "आपका कहना तो ठीक है लेकिन एक बात बड़ी महत्त्वपूर्ण है। हमें उसे भूलना नहीं चाहिए।"

"वह क्या है मेरे बेटे?"

"अगर हिसाब लगाकर देखा जाए तो यदि हम इसी रफ़्तार से चलते रहे तब तो हमें 5, 6 वर्ष लग जाएंगे।"

"तुम कैसे जानते हो कि तुम्हारा हिसाब ठीक है?" चाचा जी गुस्से से बोले, "क्या तुम समझते हो कि हमारी शेष यात्रा भी इसी तरह से ही चलेगी। तुम्हें यह कैसे मालूम कि यह रास्ता एकदम सीधे नहीं जाता? हमारे अलावा कोई और भी इसी रास्ते से होकर जा चुका है और जब उसे सफलता मिल गई तो हमें भी अवश्य मिलेगी।"

"मैं भी यही आशा करता हूं लेकिन यदि आज्ञा दें तो—"

"चुप रहो। बेकार बक-बक मत करो।"

मैंने देखा कि चाचा जी का गुस्सा बढ़ता जा रहा है, तब मैंने चुप रहना ही उचित समझा।

(अगले अंक में जारी)

जूलेवर्न के उपन्यास *'ए जर्नी इन टू दी सेंटर ऑफ अर्थ.'* का अनुवाद। अनुवादक : प्रभात किशोर मिश्र। सौजन्य : इंडियन प्रेस, इलाहाबाद। सभी चित्र : शोभा घारे।

गिद्ध

चकमक के अप्रैल, 1990 के अंक में तुमने पढ़ा था कि गिद्ध धरती से उठने वाली गर्म हवाओं की धारा का उपयोग करके बिना पंख हिलाए हवा में चक्कर लगाते रहते हैं।

यदि हम किसी पेड़ या मकान पर बैठे हुए गिद्ध को देखें तो यह काफ़ी बदसूरत दिखाई पड़ता है। इसका सिर और गर्दन गंजे होते हैं। शेष शरीर परों से ढका होता है। इन परों का रंग भी काला - भूरा और मटमैला होता है। किंतु जब यह बदसूरत पक्षी गर्म हवा की धारा पर सवार होकर ऊंचाई पर पहुंच जाता है और बिना पंख हिलाए हवा में चक्कर काटने लगता है, तो हम उसकी बदसूरती को भूल जाते हैं, और ऐसा लगता है कि घंटों तक इसे देखते ही रहें।

गिद्ध मनुष्य के लिए बहुत ही उपयोगी पक्षी है। क्या तुम सोच सकते हो कि ऐसा क्यों है? यदि किसी मरे हुए जानवर का सफाया करते हुए गिद्धों को तुमने देखा होगा तो तुम्हें इस प्रश्न का उत्तर खोजने में कठिनाई नहीं होगी। जैसे ही कोई जानवर मर जाता है, तुरंत गिद्धों का झुंड आकाश से उतर आता है और लाश पर टूट पड़ता है। इनके साथ चील, कौए आदि भी होते हैं, पर अधिक संख्या गिद्धों की ही होती है। ये आपस में लड़ते - भिड़ते, चीखते - चिल्लाते और एक दूसरे को धकियाते हुए अधिक से अधिक भोजन प्राप्त करने की कोशिश करते हैं और कुछ ही समय में लाश की केवल हड्डियां ही शेष रह जाती हैं। यह देखा गया है कि एक बड़े आकार की गाय या भैंस की लाश का सफाया करने में गिद्धों को एक घंटे से भी कम समय लगता है। अब जरा सोचो कि गिद्ध न होते तो किस तरह मरे हुए जानवरों की लाशें सड़ती रहतीं और सब दूर गंदगी और बीमारी फैल जाती।

भारत में गिद्ध की 11-12 जातियां पाई जाती हैं किंतु सबसे अधिक संख्या में पाया जाने वाला और सबसे अधिक परिचित गिद्ध वह है जो यहां चित्र में दिखाया गया है। इसकी सबसे बड़ी पहचान है इसकी पीठ पर पाया जाने वाला सफ़ेद धब्बा। इसीलिए इसे अंग्रेज़ी में व्हाइट बैक्ड यानि सफ़ेद पीठ वाला गिद्ध कहते हैं।

जब ज़मीन पर बैठा हुआ गिद्ध उड़ान भरता है तब वह पहले दोनों टांगों के बल फुदकता हुआ भागता है और फिर गति पकड़ने पर छलांग मारकर हवा में ऊपर उठता है। अपने भारी - भरकम शरीर के कारण गिद्ध तब तक उड़ नहीं सकता जब तक कि धरती से गर्म हवा के प्रवाह उठना शुरू न हो जाएं। यही कारण है कि ठंड और बरसात के मौसम में गिद्ध सुबह देर तक पेड़ों पर सोए रहते हैं और सूरज की किरणें तपने पर ही उड़ान भर पाते हैं। इसी प्रकार जब कोई गिद्ध अधिक भोजन कर लेता है तो वह उड़ नहीं पाता और उसे रात ज़मीन पर ही गुजारनी पड़ती है।

गिद्ध का भोजन करने का ढंग बहुत गंदा होता है। अक्सर उसे लाश के भीतर घुसना पड़ता है। प्रायः मांस के एक ही टुकड़े को पाने के लिए दो गिद्ध उससे रस्साकसी करते देखे जा सकते हैं। किंतु यह पक्षी नहाने का बड़ा शौकीन होता है और इसे अक्सर नदियों और तालाबों के उथले पानी में नहाते हुए देखा जा सकता है।

नर और मादा गिद्ध एक से दिखाई पड़ते हैं। इनका प्रजनन अक्टूबर से मार्च तक होता है। ये किसी बड़े पेड़ (जैसे बरगद, पीपल, आम, इमली) पर टहनियों के टुकड़े बेतरतीब ढंग से जमाकर घोंसला बनाते हैं। इस घोंसले में मादा एक ही अंडा देती है। अन्य पक्षियों की भांति गिद्ध बच्चों के लिए चोंच में भोजन लेकर नहीं आते। वे खाए हुए भोजन को उगलकर बच्चों को खिलाते हैं।

□ अरविंद गुप्ते

(चित्र सौजन्य : बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी)

चलते-फिरते तथ्य
पानी में चलन - II

दीपंकर गोस्वामी
इंडस्ट्रियल डिजाइन सेंटर, बम्बई.

पानी में चलन का सबसे आम तरीका तैरना है। मछलियां पानी में तैरती हैं। परंतु तैरना, पानी में चलन का, एकमात्र तरीका नहीं है। कुछ प्राणी पानी में चलते हैं, कुछ रेंगते हैं, कुछ जेट की तरह चलते हैं और कुछ पानी से ऊपर छलांग लगाते हैं और फिर पानी में कूदते हैं। कुछ ऐसे प्राणी भी हैं जो पानी में एक ही जगह रहकर अपने शिकार का इंतज़ार करते हैं।

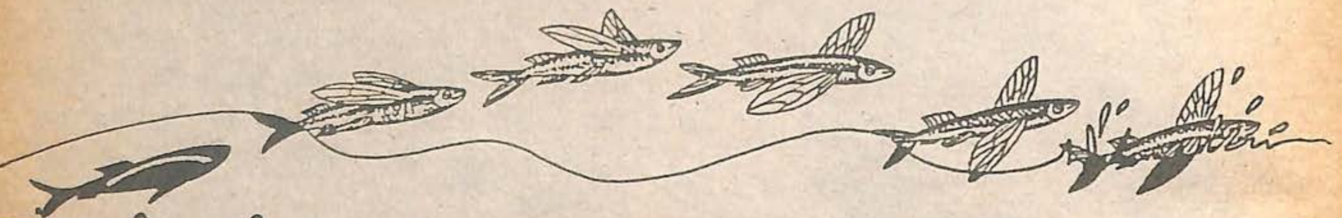

उड़ने वाली मछली

मछलियां कुशल तैराक हैं, यह तो हम जानते ही हैं। परंतु एक ऐसी मछली है जो पानी से बाहर कूदकर ग्लाइड करती है। पहले, वह अपने पंखों को समेटकर पानी में ही अपनी गति बढ़ाती है। फिर पानी की सतह से ऊपर उठकर वह अपने अगले पंखों को फैलाकर हवा में ग्लाइड करती है।

क्या तुम यक़ीन करोगे?

- छोटी वेलेला मछली के शरीर पर पाल जैसी रचना होती है जिसकी मदद से वह पाल नाव की तरह पानी की सतह पर चलती है।
- स्क्विड (समुद्रफेनी) अपने साइफन को लगभग 360 अंश घुमा लेता है। शत्रुओं से बचने के लिए वह किसी भी दिशा में तुरंत घूमकर भाग सकता है।
- समुद्री एनीमनी फूल जैसा लगता है। परंतु उसकी 'पंखुड़ियां' वास्तव में शिकार पकड़ने के लिए स्पर्शक अंग होते हैं।

- ऐंगलर मछली शिकार को आकर्षित करने के लिए अपने ऊपरी पंखों पर लगे अंग को हिलाती है।

- रे मछली कमज़ोर तैराक है। डर लगने पर वह अपने अगले पंखों को फड़फड़ाकर तैरती है।

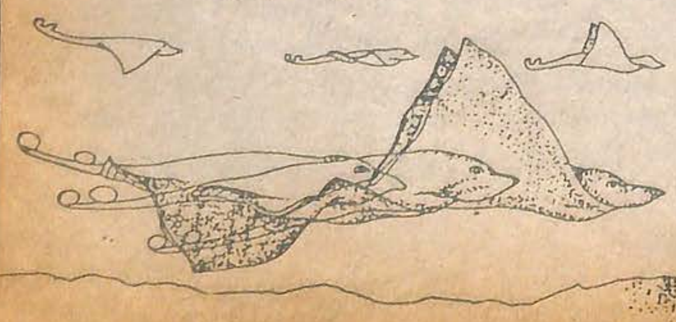

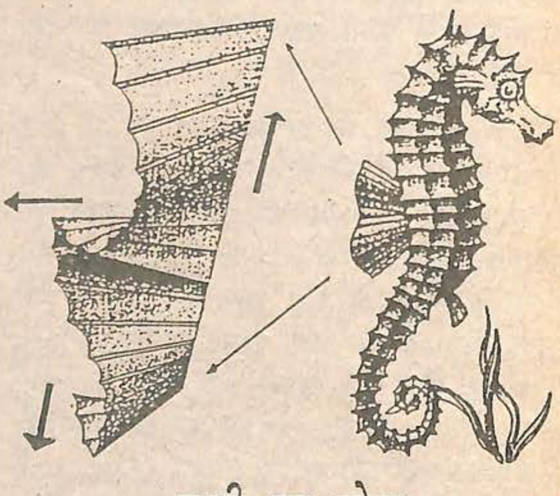

पानी का घोड़ा

समुद्री घोड़ा अपने ऊपरी पंखों को लहराकर धीरे-धीरे चलता है—आगे, पीछे, ऊपर और नीचे!

तारा मछली की बाहों की निचली सतह पर हज़ारों छेद होते हैं जिससे वह निर्वात (शून्य) उत्पन्न करके समुद्र तल पर चिपकती है। इन्ही बांहों की मदद से वह आगे बढ़ती है।

मछली ज़मीन पर

कीचड़ में फुदकने वाली मछली (मडस्किपर) प्रशांत और हिंदमहासागर में पाई जाती है। उसके अगले पंखों के स्थान पर मज़बूत रूपांतरित अंग होते हैं जिनकी मदद से वह ज़मीन पर चलती है।

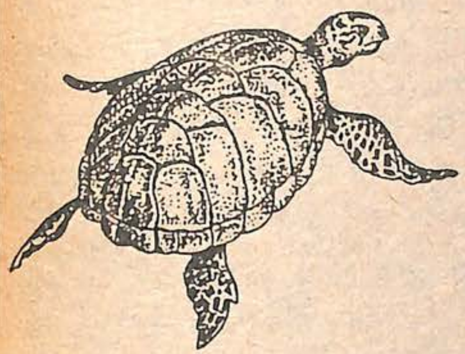

समुद्री कछुआ भी शानदार तैराक है। वह अपनी बांहों को पतवार की तरह चलाकर पानी में तैरता है।

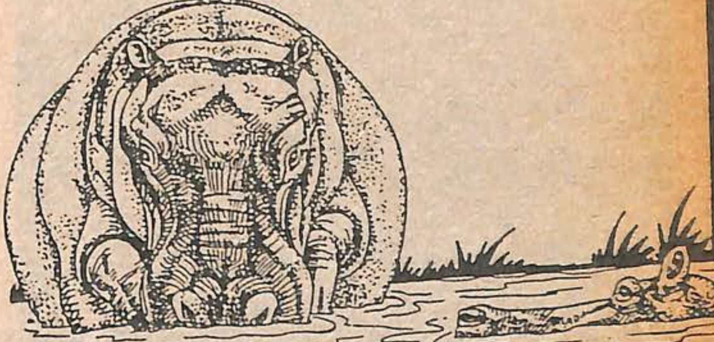

दरियाई घोड़ा भारी शरीर वाला जानवर है। उसके शरीर का आयतन बहुत अधिक होता है। फिर भी वह एक कुशल तैराक है। वह अपना अधिकांश समय पानी में ही व्यतीत करता है। वह कभी-कभार ही सतह के ऊपर निकलता है। क्या तुम ऐसे किसी पालतू जानवर को जानते हो जो इस प्रकार अपना जीवन गुज़ारता है?

मनुष्य - एक तैराक

मनुष्य महासागर के महान तैराकों का मुकाबला नहीं कर सकता, परंतु उसको तैरने में खूब मज़ा आता है। यहां तैरते व्यक्ति की विभिन्न स्थितियों को ध्यान से देखो।

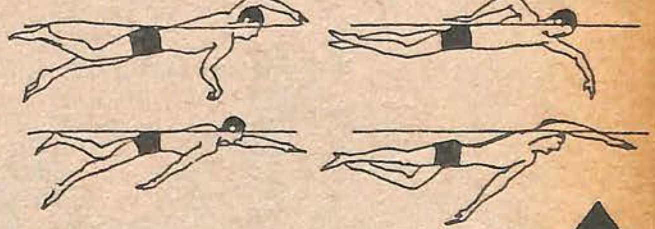

मूक हंस उड़ने के पहले अपनी गति को बढ़ाने के लिए काफ़ी दूर तक पानी को छपकाकर दौड़ता है।

पानी में जेट

ऑक्टोपस अपने स्पर्श अंगों की मदद से समुद्रतल पर रेंगता है। परंतु खतरे की स्थिति में वह स्पर्श अंगों को समेटकर अपने कवच को सिकोड़ता है। सिकुड़न से कवच में भरा पानी शक्तिशाली जेट की तरह बाहर निकलता है इससे ऑक्टोपस विपरीत दिशा में हटता है।

कठपुतली - कछुआ बनाओ

कठपुतली - कछुआ बनाओ। कछुए के पैर और सिर लकड़ी से बना सकते हो। शरीर के लिए नारियल की नरेली लो।

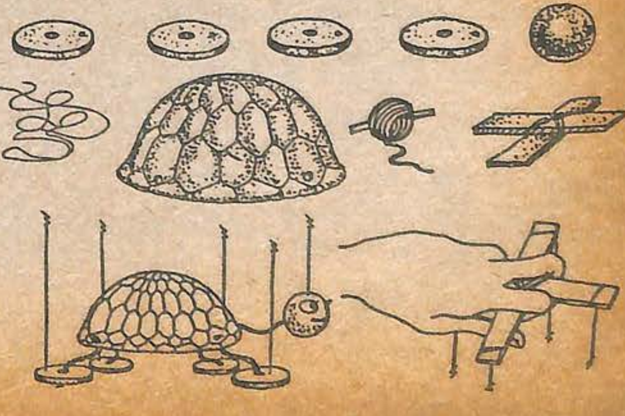

कहां जाएंगे आदिवासी?

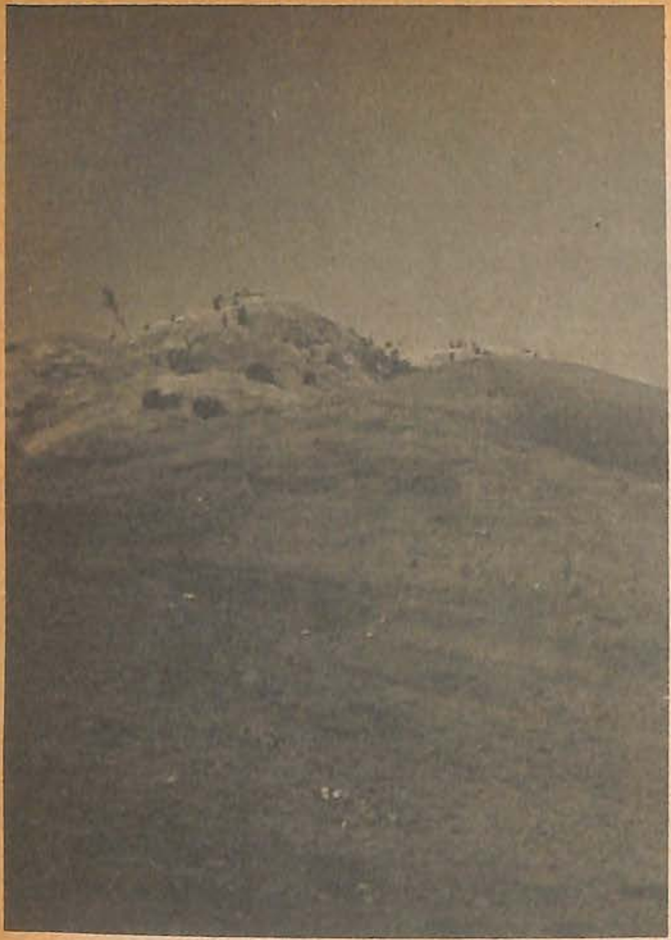

यह हाल हो गया है झाबुआ के जंगलों का!

इस देश में 56% लोग लकड़ी गोबर या फिर खेतों में फ़सलों के डूंडों से ही अपना चूल्हा गरमाते हैं। कुल ऊर्जा में बिजली तो केवल 3% है।

वास्तव में ज़मीन-जंगल ही देश की अधिकांश आबादी का जीवन स्रोत है, खासकर आदिवासियों का। मध्यप्रदेश के दो ज़िले, झाबुआ व बस्तर प्रमुख रूप से आदिवासी ज़िले हैं। पर दोनों में एक अंतर भी है। बस्तर में अभी भी काफ़ी जंगल हैं, लेकिन विकास परियोजनाओं से उन पर भी खतरा मंडरा रहा है। झाबुआ में तो जंगल बचे ही नहीं हैं, ऐसा लगता है जैसे हम पृथ्वी पर नहीं चांद की सतह पर खड़े हों।

इंदौर के हमारे साथी *रवीन्द्र शुक्ला* ने इन दो ज़िलों के कुछ चित्र खींचे हैं। जिनमें वहां हो चुके या होने वाले विनाश की तस्वीर साफ़ दिखती है। चलो, हम भी ऐसे ही कुछ चित्र देखते हैं :

झाबुआ

ये ढोर बिना जंगल कितने दिन ज़िंदा रह पाएंगे?

जंगल तो जंगल, पहाड़ियों को भी मिट्टी-पत्थर के लिए काटा जा रहा है।

झाबुआ का आदिवासी कैसे भी थोड़ी-बहुत सूखी खेती कर लेता है, लेकिन ऐसी खेती से कितनों का और कब तक पेट भरेगा?

बस्तर

किसका विकास? किसकी हानि?

बेलाडीला (बस्तर) के एक बड़े क्षेत्र में लोहे के अयस्क की ख़दानें हैं। ढेर सारा लोहा निकाल कर सीधे जापान भेजा जाता है। लेकिन दूसरी तरफ इन खदानों की खुदाई से ज़मीन का एक बड़ा हरा-भरा हिस्सा वीरान होता जा रहा है। और इस सबसे स्थानीय आदिवासी को क्या मिलता है?....

....**प्रदूषण**! रेलगाड़ी में लादने से पहले अयस्क को जिस पानी से धोया जाता है, वह पानी मटमैले लाल रंग के साथ दंखनी नदी को ज़हरीला बना देता है। आगे जाकर यह पानी संखनी नदी से मिलकर बस्तर के प्रमुख पानी स्रोतों को इस क़द गंदा करता है कि सदियों से आदिवासियों की प्यास बुझाने वाला यह पानी अब पहले की तरह जीवनदायी नहीं रहा!

बस्तर की प्रमुख नदी इंद्रावती के आसपास का इलाका बहुत ही हरा-भरा है। लेकिन यहीं पर अब एक बांध बनाने की योजना है—बोधघाट, जिससे आसपास के घने जंगल नष्ट हो जाएंगे। लेकिन परियोजना का विरोध भी ज़ोर से हो रहा है।

यह पुल बोधघाट के प्रस्तावित बांध स्थल को जाता है....,

....जो यह है!

☐ विनोद रायना
(फोटो सौजन्य : रवीन्द्र शुक्ला)

नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे

गुदड़ीलाल चूहों के बीच में

जब करछी की कहानी ख़त्म हुई तो गुदड़ीलाल सो गया। इसी बीच वहां रहने वाले चार चूहे उसे केक समझकर अपने बिल में उठा ले गए।

चारों चूहे बिल में पहुंचकर गुदड़ीलाल के चारों तरफ बैठ गए। उन्होंने गुदड़ीलाल को बीच में लिटा दिया। उसके बदन पर लगी सारी लपसी अब तक सूख चुकी थी और वह सचमुच एक केक जैसा ही लग रहा था!

"अब हम यह केक खाएंगे," सबसे बड़ा भाई बोला।

बाकी चूहे तथाकथित केक पर झपटने की तैयारी करने लगे।

"ठहरो।" सबसे बड़े भाई ने आदेश दिया। "अपनी जगह से हिलो मत!"

बाकी सब भाई जहां के तहां रुक गए।

"मेरे दिमाग में एक विचार आया है," सबसे बड़ा भाई बोला। "हम यह केक अभी नहीं खाएंगे। आज हमारे लिए बड़ी खुशी का दिन है। पहली बात तो यह है कि आज हमें केक मिला है। दूसरी बात यह है कि हमारा सबसे छोटा भाई अभी नहीं लौटा, इसलिए यह केक हम चार लोग ही खाएंगे। यह खुशी का दिन हम अच्छी तरह मनाएंगे। इसके लिए हममें से हरेक को अपनी प्रशंसा में एक कविता सुनानी होगी। फिर केक बांटा जाएगा। हममें सबसे अधिक योग्यता रखने वाले और सबसे जल्दी कविता रचने वाले को..."

"केक का सबसे बड़ा हिस्सा मिलेगा!" दूसरे भाई ने वाक्य पूरा किया।

"बिल्कुल ठीक है। सबसे बड़ा हिस्सा उसी को मिलेगा। क्या तुम लोग सहमत हो? अगर सहमत हो, तो मैं शुरू करता हूं। पहले मैं सुनाता हूं,

मैं हूं चूहा जेठा काला,
अपने घर का मुखिया आला;
करते इज्जत भाई लोग,
सब पर चलता मेरा रोब!"

सबसे बड़े भाई ने यह कविता आख़िर इतनी जल्दी कैसे रच ली? बात दरअसल यह थी कि दूसरा भाई सबसे बड़े भाई के जन्मदिन पर यह कविता सुना चुका था। उसी कविता में उसने "तुम" की जगह "मैं" कर दिया था।

दूसरा भाई मन ही मन हंसा, पर बाहर से दिखाने के लिए ज़ोर से बोला, "कितनी बढ़िया कविता है! कितनी प्रभावशाली रचना है! इसे सुनकर मैं गद्गद हो गया हूं!"

सबसे बड़ा भाई अपनी तारीफ सुनकर बहुत ख़ुश हुआ। पर उसने देखा, बाकी भाई उसके बारे में एक भी शब्द नहीं कह रहे। "तुम लोगों को क्या सांप सूंघ

गया है?" उसने गुस्से में पूछा। "क्या तुम सब गूंगे हो गए हो?"

तीसरा भाई कुछ खोया-खोया सा लग रहा था। वह दरअसल मन ही मन कविता रच रहा था। उसने सोचा, ये लोग शायद गलगल के बारे में बात कर रहे हैं इसलिए सिर हिलाते हुए बोला, "हां, हां! यह एक असली गलगल है।"

"बिलकुल ठीक! एक बढ़िया गलगल है!" चौथे भाई ने तोते की तरह दोहराया।

"बेवकूफों जैसी बातें न करो!" सबसे बड़े भाई ने डांटा। "मैं गद्गद होने की बात कर रहा हूं, गलगल की नहीं! तीसरे भाई, जाओ चौथे भाई की गरदन पर दांत गड़ा आओ!"

तीसरा भाई लपककर चौथे भाई के पास जा पहुंचा और उसकी गरदन पर ज़ोर से दांत गड़ा आया। चौथा भाई दर्द के मारे चिल्ला पड़ा।

जब सबसे बड़े भाई का गुस्सा कुछ शांत हो गया तो वह बोला "ठीक है, दूसरे भाई अब तुम्हारी बारी है कविता सुनाने की।"

दूसरे भाई ने काफी सोचने का पाखंड रचते हुए यह कविता सुनाई :

मैं हूं नंबर दो मस्ताना,
आता सभी काम निपटाना;
जीत हमेशा होती मेरी,
चींचीं, चूंचूं चेरीफेरी!"

"बस? क्या ख़त्म हो गई तुम्हारी कविता?" सबसे बड़े भाई ने पूछा।

"हां।"

"लेकिन यह 'चींचीं, चूंचूं चेरीफेरी' क्या बला है? इसका क्या मतलब है?"

"इसका कोई मतलब नहीं है। दरअसल चौथी पंक्ति मुझे सूझ ही नहीं रही थी। इसलिए मैंने इसे जैसे-तैसे पूरा कर दिया। अगर आपकी जैसी योग्यता मेरे पास होती, तो कितना अच्छा होता!"

वास्तव में दूसरे भाई ने यह कविता बहुत पहले ही रच डाली थी। उसकी चौथी पंक्ति इस प्रकार थी : "भाई गुजरा, चौधर मेरी!" पर वह इतना बेवकूफ नहीं था कि सबसे बड़े भाई के सामने यह पंक्ति सुनाता। इसलिए उसने उसकी जगह "चींचीं, चूंचूं चेरीफेरी!" कर दिया था।

पर सबसे बड़ा भाई उसकी चापलूसी से खुश था। इसलिए वह बोला, "वैसे तो चींचीं, चूंचूं चेरीफेरी' को कविता नहीं माना जा सकता। पर तुम कहते हो, तो मान लेता हूं। अब तीसरे भाई की बारी है।"

तीसरा भाई कविता रचने में डूबा हुआ था और सोचते-सोचते उसका सिर चकरा गया था। वह हकलाता हुआ यह पंक्ति सुनाने लगा,

"नंबर तीन.... बड़ा बलवान.... बड़ा बलवान।"

"अगर तुम इस तरह कविता सुनाओगे, तो तुम्हें केक नहीं मिलेगा," सबसे बड़ा भाई चिल्लाकर बोला।

तीसरा भाई घबरा गया और जल्दी-जल्दी कविता सुनाने लगा,

नंबर तीन बड़ा बलवान,
मुझे दांत-पंजों का मान;
भाई देता जब आदेश,
दांत बदन में करें प्रवेश!"

"तुम्हारे दांत किसके बदन में प्रवेश करते हैं?" सबसे बड़े भाई ने एकदम पूछा।

"जो भी मुझे ऐसा करने को कहता है!" तीसरे भाई ने कहा।

"क्या कहा?" बड़ा भाई गरजकर बोला।

मेरा मतलब है, तुम जिसे भी काटने का हुक्म दोगे मेरे दांत उसके बदन में प्रवेश कर जाएंगे," तीसरे भाई ने हकलाते हुए कहा।

"उंह," सबसे बड़े भाई ने असंतोष प्रकट करते हुए कहा। "तुम्हारी कविता में इसके बारे में साफ़-साफ़ नहीं कहा गया है। यह कविता बिलकुल अच्छी नहीं है! अब चौथे भाई की बारी है!"

चौथे भाई ने कविता सुनाई,
मैं हूं भाई नंबर चार,
दिन में खाता हूं दस बार,
बरफ़ी, खीर, समोसा, केक,
नहीं छोड़ता व्यंजन एक!"

ज्योंही चौथे भाई की कविता पूरी हुई, उसकी नज़र गुदड़ीलाल पर पड़ी। उसे देखते ही उसके मुंह में पानी आ गया।

"अच्छा, तो तुम खाने में इतने तेज़ हो!" सबसे बड़ा भाई बोला। "यह कैसी कविता है?"

"भैया, क्या अब केक को बांटें?" तीसरे भाई ने पूछा।

"ठीक है," सबसे बड़े भाई ने इज़ाज़त दे दी। "पर इसका बंटवारा कैसे किया जाए?"

"यह तो बड़ा आसान काम है," चौथे भाई ने खुश होकर कहा। "पांचवां भाई तो आया नहीं। इसलिए हरेक के हिस्से एक-चौथाई केक आ सकता है।"

"यह कैसे हो सकता है? तुमने यह कैसे सोच लिया कि एक-चौथाई केक तुम्हें मिल जाएगा? न तो तुमने केक ढूंढ़ा है और न तुम्हारी कविता ही अच्छी है।"

"मैं सोचता हूं," दूसरा भाई बोल पड़ा, "सबसे बड़े भाई को आधा केक मिलना चाहिए और तीनों को...।"

"यह ठीक है," सबसे बड़े भाई ने ज़ोर से कहा। "अगर तुम लोग मुझे पूरा केक भी देना चाहो, तो मैं इंकार नहीं करूंगा।"

"हम आपको पूरा केक नहीं देंगे," तीसरे भाई ने फ़ौरन कहा। "हम आपको केवल आधा केक देंगे।"

"इससे मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा," सबसे बड़े भाई ने कहा।

"फ़र्क क्यों नहीं पड़ेगा?" चौथा भाई बोला। "अगर किसी चीज़ को दो बराबर हिस्सों में बांटा जाए, तो हमारे पास दो आधे हिस्से हो जाते हैं।"

"बिलकुल ठीक है," सबसे बड़ा भाई एकदम बोल पड़ा। "अगर दो को एक से विभाजित किया जाए, तो दोनों मुझे मिलने चाहिए।"

वे लोग इस सवाल में इतने उलझ गए कि गुदड़ीलाल की हंसी फूट पड़ी।

"तुम हंस क्यों रहे हो?" सबसे बड़े भाई ने दूसरे भाई को फटकार सुनाई।

"मैं कहां हंस रहा हूं?" दूसरे भाई ने कहा।

"दो हिस्सों को एक से विभाजित किया जाए, तो क्या नतीजा निकलेगा?" बड़े भाई ने रोब से पूछा।

"यह सवाल मेरी बुद्धि के परे है," दूसरे भाई ने जान छुड़ाने के लिए कहा। "मैं इसे फ़ौरन हल नहीं कर सकता।"

"मैं केक खाता हूं। तुम लोग यह सवाल हल करो!" सबसे बड़े भाई ने सलाह दी। "केक ख़त्म होने तक तुम्हारा सवाल ज़रूर हल हो जाएगा।"

सबसे बड़ा भाई ज़मीन पर बैठ गया। उसकी नाक सिकुड़ गई, मूंछें हिलने लगीं और पंजे फैल गए। वह केक खाने की तैयारी कर रहा था। तीसरा और चौथा भाई दूर से उसे देख रहे थे। उनके मुंह में पानी

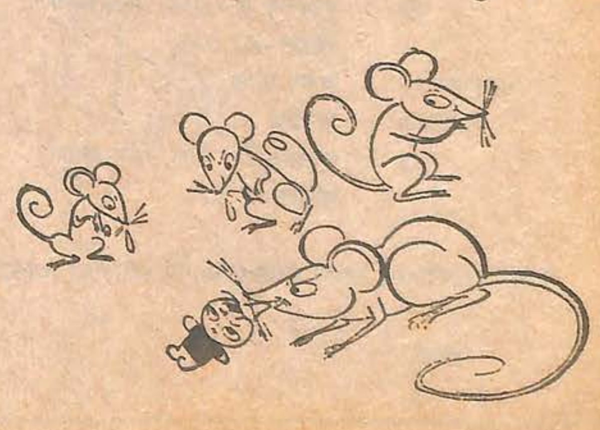

आ रहा था। पर दूसरे भाई के मुंह में पानी नहीं आ रहा था, क्योंकि उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि गुदड़ीलाल केक है।

गुदड़ीलाल डर के मारे थरथर कांपने लगा।

"कहीं ऐसा न हो कि वह मेरी नाक ही नोच खाए," उसने सोचा। बड़े भाई ने पहले गुदड़ीलाल की टोपी खाने की कोशिश की। लेकिन टोपी लपसी से लथपथ होकर उसके सिर से चिपक गई थी। इसलिए वह अलग नहीं हो पाई। फिर उसने गुदड़ीलाल का हरा जाकिट खाने की कोशिश की, पर उसे भी वह उतार नहीं पाया।

इसके बाद उसने गुदड़ीलाल का सफ़ेद पाजामा खाना चाहा। इस बार भी वह असफल रहा।

"यह कैसा केक है?" गुदड़ीलाल को नीचे गिराता हुआ वह गुस्से में चिल्लाया। "यह तो कपड़े का एक पुराना गुड्डा मालूम होता है!"

तीसरे और चौथे भाई ने भी पास जाकर केक खाने की कोशिश की। बेचारा गुदड़ीलाल दर्द के मारे चीख उठा। उसके चीखने की आवाज़ सुनकर दोनों चूहे भाग खड़े हुए। गुदड़ीलाल अपने दोनों पैरों पर खड़ा होना चाहता था, पर नहीं हो पाया और उसी जगह पड़ा रहा। वह इतनी देर लेटा रहा कि उसके पांव सुन्न हो गए। इस चलने-फिरने वाले केक को देखकर चूहे चकित रह गए। वे गुदड़ीलाल को टकटकी लगाकर देखते रहे।

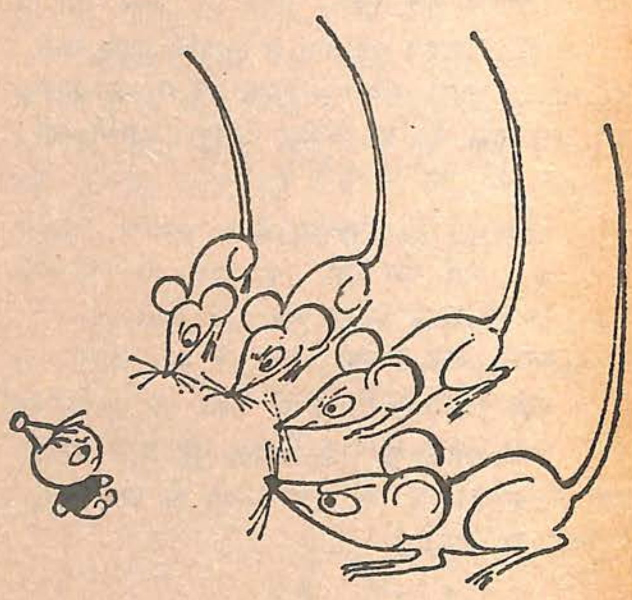

मूल लेखक : सुन यओच्युन
अनुवादक : जानकी एवं श्यामा बल्लभ
सभी चित्र : शन फेई

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्त्व और अन्य तथ्यों के संबंध में विवरण :

प्रकाशन का स्थान : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.
मुद्रक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.
संपादक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्त्व है : रेक्स डी रोज़ारियो, एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–462 016.

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जुलाई, 1990

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

कन्हैयालाल, आठवीं, धार

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्टार द्वारा पंजीकृत।
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/90

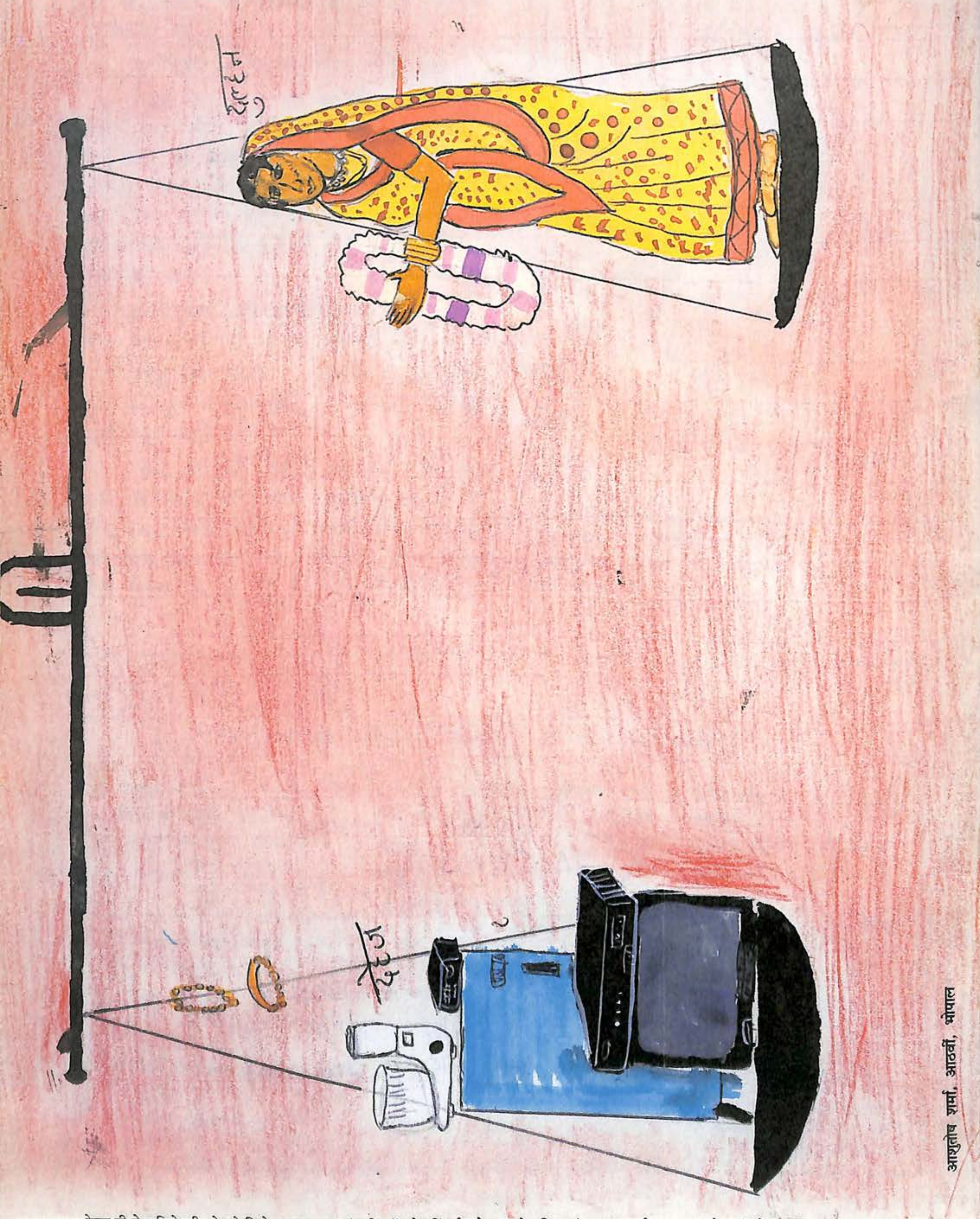

रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना।